से बहुत दूर २ की चीज़ें नज़र आती हैं बाईं तरफ़ दक्खिन दिशा मे ग्लेन आइला की चौड़ी घांटी है लेकिन केरन् लोकन् के ऐसे ऊंचे २ पहाड़ इसके न थे ब्लेंड आइला से आगे किंरोज़ के पीछे लोमंड का पहाड़ लेवन के झील पास नज़र आया ॥

एक ऐसे ऊँचे ढार चट्टान पर हम लोग बैठे कि जिसके नीचे देखने से झाईं मालूम होती थी इस जगह दो बजेने से पहिले जलपान किया रौशनी बहुत ठंढ़ी और ऐसी सुहावनी थी जैसी मिसाल पहिले मैंने ताज़े अंगूर पर के सब्ज़ी की दी है हवा बहुत सर्द चलरही थीं उस वक़्त का खाना बहुत भला मालूम हुआ केरन् पहाड़ की चोटी पर अठन्नी से भी मोटी बर्फ़ जमी थी जब ब्रौन ने एक टुकड़ा उठा कर हाथ मे रक्खा तो गली नहीं ॥

हेलीना बहुत ही खुश हुई क्योंकि सचमुच यही एक बड़ी भारी सफ़र हुई कि जिसमें वह साथ थी ॥

डंकन और कल्लाटर का रखवारा आर्सटूवर्ट हम लोगों की रहनुमाई करते थे ॥

जल्दी से मैंने कुछ नक़्शा खींचा और आल्बर्ट ने एक पारचे पर लिखा कि हम लोगों ने यहां खाना खाया और एक बोतल मे पारचे को रख कर ज़मीन मे गाड़ दिया ग्रांट ने भी ऐसाही किया था जब हम लोग पहिली बार बेन् मुइक् ढूई गये थे इसके बाद थोड़ी दूर तक पैदल हम लोग उस राह से गए जिधर से दलदल के सबब पहिले फेर खाकर घोड़े पर आये थे हम लेडी लोग थोड़ी दूर के बाद घोड़े पर सवार हुए और आते वक़्त केरन् ग्लोसाई को दाहिनी तरफ़ छोड़ कर दूसरी राह ली और केरन् वाल की तरफ़ से गए पीछे फिर और दूर २

के पहाड़ ग्लेन आइला और केरन् लोकान् की तरफ़ जहां लार्ड एरली का इलाका है देखा तो बहुत ही भला और सुंदर मालूम हुआ क्योंकि दिन ज्यों २ ख़तम होने लगा पहाड़ नीली रोशनी से बहुत साफ़ नज़र आने लगे और घांटियों मे छाया पड़ती गयी शिकेलियन् और दूसरे पहाड़ों की कतार भी बहुत अच्छी तरह नज़र आने लगी यह सब देख भाल कर मेरे दिल् का शौक़ खूब बढ़ा कि बार २ हे लेंड की तरफ़ सफ़र कीजे हम लोग गार्बे कोरी पर आये जहां से स्पिट्टाल की सड़क नज़र आती है और छोटे २ पहाड़ जो इस उंचाई पर से हम लोगों को नज़र आते थे नई २ तरह से एक दूसरे के साथ मिले हुए थे ॥

डंकन के लिखने बमूजिब रास्ते की जगहों का नाम नीचे लिखा है मुझ को इन नामों से इस कदर गरज़ नहीं है ॥

बाल् मोरल् से चलते हुए

झील कल्लाटर, चार मील पर है

ग्यारह बजे दिन को लाककल्लाटर से आगे बढ़े ।

लिटिल् केरन् टर्क

झील कांटर

केरन् ग्लेशाई

केरन् लोकान्

कानिस, छः मील पर

फिरते वक्त ।

केरन् लोकान्

केरन् ग्लेशाई

गार्बे कोरी

मंथई जाई रोड

ग्लास् मील्

फ़ीयन् कोरी

आरन घे

शीयन् स्पिट्टाल का पुल साढ़े चार बजे पहुंचे

शीयन् स्पिट्टाल के पुल से बाल् मोरल् तक सोलह मील ॥

इस सफर से इस देश का जुग़राफिया अच्छी तरह ध्यान पर चढ़ गया आल्बर्ट के बड़ी खुशी हुई क्योंकि यह सफ़र हम लोगों को बिल्कुल नई राह से हुई कि जिधर पहिले कभी नहीं गए थे जुग़राफ़िये की लियाकत मुझ को कम है इससे मैं बयान न कर सकी मंथई जाई की तरफ़ से जो एक ढार पहाड़ी घासों से ढकी हुई है हम लोग उतरे मैं घोड़े पर सवार थी और जहां बहुत ढार था वहां पैदल भी चलना पड़ा लेकिन् राह इतनी नम और फिसलन थी कि दो दफ़े मैं गिर पड़ी साढ़े चार बजने के करीब कासल्टन् से पंद्रह मील पर स्पिट्टाल पुल की सड़क पर आये और फेर नई सड़क के उस हिस्से पर पहुंचे जो बन चुकी है और केरन बाल तक बनने को है फेर नदी के उस पार आये जिधर हम लोगों का मकान है अगर कुछ पहिले पहुंचे होते तो आल्बर्ट के एक हिरन मिला होता लेकिन बहुत ही देर हो गई थी. चांदनी अच्छी तरह छिटक आई और हम लोग सात बजने में बीस मिनट बकी रहे इस दिलचस्प सफ़र से खुशी २ फिर आये अफ़सोस कि शायद यही हम लोगों की आख़िरी बड़ी सफ़र हुई ॥

(यह हम लोगों की आखिरी यात्रा हुई !–१८६०)

इंगलैंड और आयरलैंड की सफ़र

और

किश्ती पर दरिया की सैर।

पहिली सफ़र आयरलैंड की

बृहस्पतवार, अगस्त २, १८४६ ई० ॥

"विक्टोरिया और आलबर्ड" नाम जहाज़ मक़ाम कीव आफ़ कार्क यहां नज़दीक की राह से पहुंचे लेकिन राह अच्छी न थी दिन अच्छा और साफ था लेकिन लहर बड़ी भयानक थी इससे पढ़ने या कोई दूसरे काम में तबियत नहीं लगती थी नौ बजे सुबह को लेंडस् एंड के पार हुए जब शाम को आठ बजने के बाद हम लोग जहाज़ की छत पर आए तो मालूम हुआ कि उस वक्त कोव आफ कार्क के नज़दीक आ पहुंचे और पहाड़ पर कई जगह अलाव जलते हुए देखा और धूएं के जहाज़ों से आतशबाजी औ गुबारे छूट रहे थे यह बंदर बहुत बड़ा है लेकिन जमीन ऊंची बहुत नहीं है शफक़ फूला था उस वक्त बंदर के अंदर जाते हुए बहुत भला मालूम हुआ लेडी जोसेलीन, मिस् डासन्, लार्ड फारटेस्क्यू (यानीलार्ड स्टूबर्ट) सर जार्जग्रे (सेक्रीटरी आफ़ स्टेट होम डिपार्टमेंट) मिस् हिल्डाआर्ड, सर जेम्सक्लार्क और मिस्टर धर्क हम लोगों के साथ जहाज़ पर थे करनेल फिप्स और करनेल गार्डन् ये दोनों इक्वोरी (बादशाही ओहदेदार जिन के जिम्में घोड़ों का इंतज़ाम रहता है और बड़े कामों में सब से पहिली गाडी के कोच बक्स पर सवार होते हैं) ड्युक् ईगिल् जहाज़ पर थे ॥

शुक्रवार, अगस्त ३ ॥

कुहिरे से छाया हुआ दिन बहुत धुंध था आयरलैंड की आब वो हवा का यही हाल है आठ बजे जहाज़ों पर सलामी हुई गांजेज़ जहाज़ जिस पर झंडा था और होग जहाज़ जिस पर बड़ी भारी २ तोपें चढ़ी थीं हम लोगें के नज़दीक धूम मचाए थे यह बंदर बहुत बड़ा है और इसमें कई टापू हैं इसमें से एक बहुत बड़ा है हम लोगें के सामनेही स्पाइक का टापू है कि जिसमें काले पानीवाले कैदी रहते हैं इसके नज़दीक दूसरा एक और टापू है इसमें दूकान वगैरह है इसी के सीध में कोव की बस्ती एक पहाड़ी पर तसवीर सी मालूम होती है लड़ाई के दोनें धुंवे के जहाज़ अभी आं पहुंचे ऐडमिरल डिन्सन और जहाज़ी कप्तान लोग हमारे जहाज़ पर आए लेटर, लार्ड बेन्डन (कौन्टी के लार्ड लेफटनेन्ट) लार्ड थोमन्ड, जनैल टर्नर, कमानियर कार्क के फ़ौज़ के सलाम बजा लाए आलबर्ट जमीन पर उतरे और मैं लिखती और नक़शा खींचती रही जलपान करने की समय से पहलेही आलबर्ट फिर आए और घुमते फिरते और जहाज़ पर के कमरें का देखते रहे ॥

दो बजे हम लोग इस सैर की जहाज़ को छोड़ कर फेयरी नाम जहाज़ पर लेडी और साहिब लोगें समेत जा सवार हुवे इस जहाज़ के चारों ओर पाल और डांड़ वाली बहुत सी किश्तियां रहीं पहिले बंदर के इर्द गिर्द घूमे सब जहाज़ धूवें की नाव और सैर की किश्तियों पर से सलामी सर होती थी फिर कोव के अंदर गये उतरने की जगह लंबे बल जहाज़ लगा यह जगह बहुत सुंदर सजी थी और आदमियें से ढपी हुई और जहाज़ नाव और किश्तियें का चारों तरफ़ हुजूम था रोच व पावर साहेब और दुसरे साहेब लोग रोमनकाथलिक और

प्राटेस्टेन्ट के पांदरीयों सहित और फिर याट अर्थात सैर के जहाज़ के क्लब वाले लोगों ने एड्रेस पेश किया इस के बाद लोगों की इस खुशी को पूरी करने के लिए कि इस स्थान का नाम कुइन्सटौन रखा जाय क्योंकि यह पहिला स्थान था जहां मैने आयरलैन्ट के मुल्क में क़दम रखा मैं किनारे पर उतरी तोपें ने खूब शोर मचाई तोप ख़ाना इतना नज़दीक रखा गया था कि कमरा जो थोड़ी समय के लीए बना था और जिसके अंदर हम गये थे दलकने लगा लोगों ने भी जयकारे की आवाज़ से बड़ी धूम मचाई थी जल्दही हम लोग फिर जहाज़ पर सवार हुवे और कार्क की तरफ़ ली नदी के चढ़ाव पर चले यह बहुत सुंदर और दोनों ओर जंगल से हरा भरा कि मुझ को टामर नदी का स्मरण हो आया जाते हुवे देखने के योग्य मंक्सटैान नाम एक छोटा सा स्नान करने का घाट मिला इसके बाद ब्लाकराक कासल जहां हम लोग एक सामन मछली और एक बहुत ही सुंदर आड्रेस ब्लाकराक के ग़रीब मछुवों से लेने को छन भर ठहरे ॥

ज्यों ज्यों नगर के निकट हुवे देखा कि लोग पैदल और घोड़े व गाड़ियों पर सवार नदी की तरह उमड़े चले आते हैं जब हम लोग कार्क पहुंचे फेयरी जहाज़ फिर बेंड़े बल हो गया और हम लोगों ने सब एड्रेसों को लीया पहिले मेयर और कारपोरेशन ने दिये उसी समय मेयर को मैंने नाइट बनाया फिर प्राटेस्टेंन्ट बिशाप और पादरियों ने फिर रोमन काथलिक बिशप और पादरी कौन्टी के लार्ड लेफटनेन्ट शेरिफ़ और दुसरों ने दिया दोनों जज जो अपनी क़चहरी कर रहे थे अपना अपना लेबास पहने हुवे जहाज़ पर आए जब यह सब बातें हो गईं. हम लोग ज़मीन पर उतरे और कई क़दम पैदल जाकर उस जग़ह

पर आये जहां लार्ड बेन्डन की गाड़ी हम लोगों के लिये मौजूद थी लेडी लोग हमारे साथ हुईं और लार्ड बेन्डन और जेनरल घोड़ों पर सवार गाड़ी के दोनों तरफ़ हो लिये मेयर आगे गये थे और बहुत से लोग जिन में लार्ड लिस्टोल भी थे घोड़े और गाड़ीयों पर सवार पीछे आते थे बारहवें लेन्सर की पलटन हम राह और पिनशन वाले और पैदल सिपाह रास्ते के दोनों ओर परेट जमाये थे ॥

रस्ते का हाल कुछ कहा नहीं जाता पर इतना कहना काफ़ी है कि चलने में दो घंटा लगा हम लोग बड़ी बड़ी गलियों में से सवार हो कर गये उनमें से कई एक में दो बार गये वहां पर बड़ी भीड़ लगी थी तोरण और बन्दनवारों से शोभित थी गरमी और धूल वहां पर बहुत थी। कालिज के ओर से हम लोग गये तो चार कालिज पारलियामेंट के आज्ञा से बननेवाले थे उनमें से यह भी एक है लोगों ने हम लोगों की पेशवायी बहुत प्रीति से की और हर एक चीज कमालियत के साथ हुई और बहुत खूबी के साथ आरास्ता थी। कार्क नगर अंगरेजी नगरों के समान नहीं है वह परदेश सा दिखलाई देता है लोग शोर करते और बहुत जल्दी गर्म हो जाते परन्तु स्वभाव बहुत उमदा था इधर उधर दौड़ते और धक्कम धुक्की करते और हस २ कर बात चीत करते और चीख मारते और स्त्रियों की सुन्दरता बहुत अद्भुत है इस बात से हम लोग बहुत आश्चर्यित हुये ऐसी सुन्दर काली आखें और बाल और दांत हैं कि उनका वर्णन नहीं हो सक्ता सब औरतों में से एक तिहाई सुन्दर थी और कोई २ बहुत सुन्दर थीं वे टोपियां सिर पर नहीं देती. और प्राय: लम्बे २ नीले लबादे पहिनती हैं लोग बहुत बुरे कपड़े पहिनते यहां तक कि चिथड़े पहनते हैं और बहुतेरे नीली कुर्तियां और छोटे २ पायजामे साथ पायताबों के पहिनते हैं ॥

किंगसटौन लंगडगाह डबलिन खाड़ी ।

अतवार अगस्त ५ ॥

यहां कुशल से पहुंची अब मैं अपना हाल फिर लिखती हूं पहिले अढ़ाई घंटे तक समुंदर में तोड़ और तर्खा बहुत था परंतु सुहावना था कल्ह चार बजने में २० मिनिट जब रह गया हम लोग वाटरफोर्ड लंगड़गाह में पहुंचे दहिनी ओर पैठते लंगड़गाह में चट्टान है और बाईं ओर समथर है पर आगे बढ़कर दोनों ओर भूमि ऊंची है। हम लोग एक छोटे किले में गुजरे जिसे डनकेनन का किला कहते हैं जहां से जेम्स दूसरा बाइन की लड़ाई के बाद ज़हाज पर चढ़कर गये और जिस पर फिर ५० बरस तक तोपें न छूटीं और ऊपर दो छोटे २ गावों के बीच जो कि दोनों ओर थे हर एक अपने छोटे गिरजे के साथ जो चट्टान पर या पहाड़ी के चोटी पर सुंदर देख पड़ते हैं हम लोग ठहरे। हम लोगों के बांई ओर के मछली के सिकारगाह को पेसेज कहते हैं यहां सालमन मछली बहुत होती है हम लोगों के खाने के समय इन मछिलियों का एक बहुत अच्छा नमूना आया था, आलबर्ट लड़कों के साथ फेयरी पर वाटरफर्ड में जो कि चढ़ाव पर १० मील दूर है जाने का कस्द किया परंतु मैं थक गई थी और सिर मेरा घूमता था इसलिये मैं ने ज़हाज पर रह कर तसवीर खींचना पसंद किया। सात बजने के बाद आलबर्ट फिर आये परंतु जमीन पर नहीं उतरे ॥

बैसरीगल पार्क फीनिक्स पार्क ।

सोमवार अगस्त ६ ॥

इस सुहावनी जगह में जहां से उकलो की पहाड़ी मनोहर दिखलाई देती है हम लोग रहे अब मैं फिर कल्ह का हाल लिखती हूं साढे आठ बजे हम लोगों का जहाज़ खुला तीन घंटे तक समुद्र में बड़ा भयानक तर्खा था मुझे और बच्चों को समुद्र की बिमारी हो गई पर जब हम लोग बेन्सफर्ड में चट्टान टस्कर के आगे बढ़े तब समुद्र कुछ धीमा होने लगा और थोड़ी देर में बिलकुल थिर हो गया और संध्या बहुत सुहावनी लगती थी जब हम लोग आर्कोहेड पहाड़ के आगे निकल गये तब बिक्रो की पहाड़ी नज़र पड़ी यह बहुत मनोहर है सुगरलोप और कारिक पहाड़ की चोटियां बहुत नोकीली है और उनके सामने छोटी २ पहाड़िया है और जिन पर बहुत जंगल हैं । साढ़े ६ बजे डबलिन की खाढ़ी हम लोगों को देख पड़ी और हम लोगों को वहां पर स्फिंक्स और स्ट्राम्बोर्ली ज़हाज जो कि हम लोगा के साथ आने के लिये ठहरे थे मिले और उसी जगह हम लोगों को चिदंत नाम जहाज़ भी मिला और ड्रेगन नाम एक दूसरा जंगी जहाज़ लंगाड़गाह के बहुत नज़दीक मिला इन जहाज़ों के बड़े समुदाय के साथ हम लोग धीरे २ और शान से किंग्सटन के लंगड़गाह में पहुंचे जहां कि हजारों तमाशबीन हम लोगों का जयजय कार मानते हुए ठहरे थे यह बड़ा भारी लंगड़गाह है और यहां हजारों हर क़िसिम के जहाज़ रहते हैं उतरने की जगह में बड़ी भीड़ लगी थी यहां की सब चीजें बड़े दिललगाव की और मनोहर थीं । जब हम लोग उतरे

तब ठीक सात बजा था सूर्य के बैठने के समय आसपास की भूमि चमकती थी अच्छी २ इमारते और जो कुछ वहां था सब प्रकाश के कारण बहुत मनोहर दिखलाई देता था हम लोगों के चारों ओर किस्तियां जमा हो आईं लोगों को बड़ा उत्साह और हर्ष था । जब हम लोग खाना खारहे थे उस समय नाव उतारे की जगह में जहां की पलटने खड़ी थीं आई लाठ और लेडी क्लेरेन्डन और जार्ज और लाठ लेन्डसडोन और लाठ क्लेरीकेट प्रधान मंत्री और डबलिन के प्रधान पादरी और और बहुत से लोग जहाज़ पर आये मुन्सिफ़ और उस देश के रईसों ने अभिवादन पत्र सामने रक्खा दस बजे हम लोग और लड़के आलवर्ट के पीछे २ फिर उतरे और सब लोग हम लोगों के पीछे २ आते थे वहां बड़ी भीड़ जमा होगई थी लोग बड़े आनन्द से होरा मचा रहे थे और जहाज़ों पर तोप छूट रहीं थी और बाजा बज रहा था सचमुच यह अद्भुत तमाशा था रेलगाड़ी पर जाने की सड़क लोगों से घिरी थी बीबी और साहबान लोग हम लोगों पर फूल फेंकते थे रेलकी गाड़ी पर हम लोग लड़को क्लेरे डन और तीनों बीबियों के साथ बैठे पंद्रह मिनिट में डबलिन के स्टेसन पर पहुंचे यहां हम लोगों को गाड़ियां और सवार लोग जो कि एस्काट की उर्दी पहिने थे मिले दो बड़े लड़के हम लोगों के साथ और दो छोटे तीनो बीबियों के साथ चले सर एडवर्ड ब्लेकनी येरलेन्ड के प्रधान सेनापति गाड़ी के एक ओर और दूसरी ओर जार्ज घोड़े पर सवार चलते थे और पीछे २ भड़कीला कपड़ा पहिने दूसरे आफिसर लोग आते थे सत्तरहवां भालेदार रिसाला और कड़ाबीन की पलटन हम लोगों के साथ थी यह बड़े आनन्द और आश्चर्य की बात थी कि इतने उत्साहयुक्त लोग थे तिसपर भी इंतिजाम

बहुत अच्छा था फौज़ की संख्या नियत स्थान पर बाजों का बजना टोपी और रूमालों का हिलना बड़ा जयजयकार का शब्द इन सभों के कारण से यहां पर जो हुआ कभी न भूलेगा और विशेष करके इस कारण जब हम इस बात को सोचते हैं कि थोड़ा दिन गुजरा था कि इस देश में बलवा हुआ था और जंगी आईन जारी थी । डबलिन बहुत अच्छा शहर है शेकबील की गली और मोरिइन का चौक बहुत बड़ा और सुंदर है बंक घर और ट्रिन्टी कालिज वगैरह बड़ी भारी इमारतें हैं शहर में जाने को कोई फाटक नहीं है परंतु हम लोगों के जाने के लिये थोड़ी देर के वास्ते एक छोटा फाटक बना दिया गया था यहां हम लोग ठहरे और शहर के कोतवाल ने कुंजियां दी और चंद मुनासिब बातें कहीं आखिरी मेहराब में एक छोटी जीती पेडुकी जो बहुत सीधी थी और जिसके गले में जयतून की शाखा बंधी थी हमारी गोदी में लोगों ने गिरा दिया गर्मी और गर्द बहुत था हम लोग बारह बजे फीनिक्स पार्क में पहुचे जो कि बहुत बड़ा है लाठ और लेडी क्लेरेन्डन और उनके घर के सब लोग हम लोगों के दरवाजे पर पेशावाई के लिये आये । यह बड़ा सुखदायक अच्छा घर है इसके देखने से हम लोगों को क्लेरमान्ट का ख्याल आया इसके सामने चबूतरे पर बाग था जिसे लेडी नारमनबी ने बनाया था यहां से पार्क विक्लो पहाड़ की श्रेणी भली भांति देख पड़ती है हम लोग यहां बहुत अच्छे कमरों में अच्छी तरह रहे ॥

मंगलवार अगस्त ७ ॥

हम लोग दोनों बीबियों के साथ लाठ क्लेरेन्डन की गाड़ी में बिना किसी अनुचर के डबलिन में गये वहां के रईस लोग हमारे पीछे २ आते

थे वहां लोग बहुत खुश थे और बड़ा शोर मचा रहे थे पहिले हम लोग बंक घर में गये जहां के मुहतमिमों ने हम लोगों की बड़ी खातिरदारी से पेशवाई की फिर छापेखाने में गये और वहां से उन मकानों में जहां पहिले लाठ और सामान्य लोगों की मजलिस होती थी क्योंकि जिसमें अब बंक है उसमें पहिले पारलि यामेन्ट का मकान था इस स्थान से हम लोग माड़ल स्कूल में गये जहां कि डबलिन के प्रधान पादरी और रोमन केथलिक पादरी मरे जो कि अस्सी बरस का बुड्ढा प्रतिष्ठा योग्य है और दूसरे २ रईसों से जो कि स्कूल से वास्ता रखते हैं हम लोगों के पेशवाई करने के लिये आये हम लोगों ने छोटे २ बच्चों लड़कियों और लड़कों के चटशालों को देखा लड़कों के चटशाल में हम लोगों ने जबानी हिसाब के कई बहुत मुशकिल २ सवाल पूछा और उन्होंने खूब जवाब दिया हर मजहब के लड़के यहां भरती होते हैं अगर उनके मा बाप चाहते उनको उनके मजहब की बातें अलग २ सिखलाई जाती हैं परंतु मंगलसमाचार की बातें प्राप्ति करना और दान देना सब को जबरजस्ती सिखलाई जाती हैं यह किरिस्तानी मता के अनुसार है और यही सब जगह जारी होना चाहिये यहां से हरसाल हजार लड़के पढ़ाये जाते हैं जिनमें से तीन सौ को पढौनी का काम सिखलाया जाता है इसके बाद हम लोगों ने ट्रिन्टी कालिज और ऐरिश युनीवर्स्टी को देखा जिस्का बन्दोबस्त खूब उम्दा नहीं है क्योंकि रोमन-कथालिक भी भरती होते हैं डाकटर टाड साहिब जो कि सेक्रेटरी हैं और जो कि ऐरिश भाषा के बड़े पंडित हैं हम लोगों को बहुत मनोहर हस्ताक्षर और बहुत सी पुरानी वस्तुओं को दिखाया इसने हम लोगों को सेन्ट कलम्बा की किताब जिसमें हम लोगों ने अपने नामों को

लिख लिया था दिखलाई और उसने बादशाह ओब्रेन की सारंगी को भी दिखलाया ॥

यहां का पुस्तकालय ट्रिन्टी कालिज की नाई बहुत बड़ा और शोभायमान है इसके बाद हम लोग मकान की ओर चले सड़कों में भीड़ बहुत बड़ी थी और लोग हमारे शुभचिन्तक थे ठहर २ कर पानी भी कुछ बरसता था । एक बजे के बाद हम लोग मकान पर पहुंचे खाना खाने के बाद आलबर्ट डबलिन में फिर गये और मैं मकान पर लिखती पढती रही और लड़कों का कुछ सबक भी सुनती रही । पांच बजे के बाद हम लोग किलमेनहम असपताल में जो यहां से बहुत नज़दीक था गये लाठ क्लेरेन्डन हमारे और बीबी लोगों के साथ गाड़ी में जाते थे आलबर्ट और दूसरे रईस लोग घोड़े पर सवार थे । सर एड्वर्ड ब्लेकनी और इसके साथ के अफसर और जार्ज हम लोगों को वहां मिले हम लोगों ने वहां पुराने इंगलिस पानेवालों को गिर्जे को और दालान को जो कि बहुत भारी कमरा था जिसमें सब इंगलिश पानेवाले खाना खाते थे जैसे कि चेलसिया में देखा इसके बाद हम लोग सर एडवर्ड के खास कमरों को देखा फिर हम लोग गाड़ी पर सवार होकर डबलिन के खास जगहों को देखने के लिये गये कालिज ग्रीन जहां कि विलियिम तीसरे बादशाह की मूरत है स्टीफन ग्रीन जो कि फोरकोर्ट के नज़दीक और जो कि बहुत सुंदर इमारत है इन दोनों को भी देखा कई जगहों में बड़ी भीड़ लगी थी यद्यपि हम लोगों के आने की खबर उनको न थी । हम लोग सात बजने के कुछ पहिले मकान पर पहुंचे । यहां पर बड़ा भारी खाना हुआ । खाने के पीछे दो तीन सौ आदमी जिन में कि बहुत से ऐरलेन्ड के रईस थे आये इसके उपरांत नाच होने लगा ॥

बुधवार अगस्त ८ ॥

जब एक बजने को २० मिनिट बाकी था डबलिन की ओर चले दूसरी बीबियां और हम शाम का कपड़ा पहिने थे दूसरे साहिब लोग उर्दी पहिने थे हम लोग सीधे किले के ओर गये यहां सब चीजें सेन्ड-जेमसेस लेवी कें तरह थीं। सीढ़ी और सिंहासन का कमरा ठीक महल की नाई था हमने सिंहासन पर बैठकर लार्ड मेयर के कार्पोरेशन के युनीवर्सिटी के लाठ पादरी के रोमनकथालिक पादरियें के और एन्जलीकन पादरी और प्रेसबेटीरियन पादरी के और क्वेकर्स लोगें के अभिवादन पत्र को सुना उन्होंने आलबर्ट को भी अभिवादन पत्र दिया इसके उपरांत एक बड़ी सभा हुई जो कि जब छ बजने को २० मिनिट था बरखास्त हुई दो हजार आदमी यहां हाज़िर थे ॥

बृहस्पतिवार अगस्त ९ ॥

फीनिक्स पार्क में बरकनदाज समेत ६१०० आदमी की बहुत अच्छी और भारी कवाइद हुई संध्या समय हम दोनें ने अकेले खाना खाया और साढ़े आठ बजे डबलिन के बैठक में जाने के लिये रवाना हुए यहां संध्या समय प्रायः लोग जमा होतें हैं मैं ऐसा सोचती हूं कि दो तीन हजार आदमी हमारे सामने से गुजरे और १६०० बीबियां भी हाजिर थीं। जब यह सब समाप्त भया हम लोग सेन्टपेट्रिक के दालान में से और दूसरे कमरें में से टहल गये भीड़ भड़ी थी हम लोग साढ़े बारह बजे फीनिक्स पार्क में फिर आये तबतक सड़कें में बड़ी भीड़ लगी थी शहर में रोशनी खूब हुई थी ॥

शुक्रवार अगस्त १० ॥

ज़ब बारह बजने को पंद्रह मिनट बाकी था हम लोग अपने हमराहियों

के साथ लीन्सटर के ड्यूक के मकान कारटन को चले लार्ड और लेडी क्लेरेन-डन हमारे साथ गाड़ी में थीं । हम लोग उड़लेन्ड होकर गये यह जगह ह्वेट साहेब की है और इसमें बहुत सुन्दर नेबू के वृक्ष हैं और मेनूथ के पृप्रेटरी कालिज को भी जाते वक्त देखा जब कारटन के निकट पहुंचे हम लोगों ने बहुत से मेनूथ के विद्यार्थियों को देखा कारटन का उपवन बहुत सोहावना है । हम लोग यहां एक बजे के थोड़ी देर बाद पहुंचे और यहां लीन्सटर के ड्यूक और डचिस ने किलडेर के लाठ और उनके अनुचरों ने रेपटन साहेब उनकी बीबी और दो लड़कों ने हमारी पेश-वाई की। हम लोग बाग में टहलने को गये जहां कि सब लोग बटुरे थे और जहां दो बाजे बज रहे थे यह बाग फरासीसी बाग के समान था और इस में ऐरलेंड के इव वृक्ष की कितारें लगीं थी । हम लोग दो बार बाग के चारो ओर घूमे ड्यूक हमारे साथ थे और आलबर्ट डचिस के साथ । ड्यूक बड़े दयालु और अच्छे आदमी है ॥

खाना खाने के बाद हम लोगोंने मकान के बाहर टहल कर अति मनोरम गंवारों का नाच देखा ऐरलेंड के लोगों का नाच सक्काटलेंड के लोगों के नाच से बहुत भिन्न है यहां के लोग वैसा उम्दा नहीं नाचते और पैर भी दुसरे तरह से उठाते धरते हैं मानो कि ठीक गंवार हैं लोग बहुत खराब और मोटा कपड़ा पहेनते हैं औरतें दुशाला ओढती है । यहां एक आदमी दिखायी दिया था जो कि इस स्थान का नमूना मालूम पड़ता था उस की टोपी ऐसी टेढी थी कि एक कान पर ठहरी थी दूसरे लोग नीली कुर्तियां, बहुत उटंग पैजामे और नीले मोजे पहेने थे यहां तीन बुड्ढे और दुर्बल मनुष्य बांसुडी बजाते थे यहां की और स्काटलेंड की बांसुडी में बड़ा भेद है । इसमें से खूब आवाज नहीं

निकलती क्योंकि लोग मुंह से नहीं बजाते परन्तु छोटी २ धोकनी रखते हे जिसको हाथ से इधर उधर किया करतें हैं । हम लोग विहारस्थल के चारो ओर घूम कर ओर ड्यूक ओर डचिस के साथ गाड़ी में बैठ कर रवाना हुये हमारे साथ की बीबी ओर साहेब लोग पीछे २ एक बड़ी गाड़ी में आते थे ओर दूसरे लोग कोई गाड़ी में कोई घोड़े पर ओर कोई दौड़ते साथ चले आते थे परंतु ये लोग बड़े सुशील थे । ड्यूक उन पर इतने मिहरबान हैं कि लोग जो कुछ वे कहें कर डालेंगे । गर्म्मी बड़ी थी परन्तु लोग ऊन की मोटी २ कुरती पहने तमाम रस्ते दौड़ते आये यह जान पड़ता हे कि यहां के निवासी इसी तरह की कुर्ती पहनते हैं । उपवन से हम लोग एक स्थान पर आये जहां से कि विकलो पहाड़ी भली भांति देख पड़ती थी । फिर हम लोग एक बिलकुल नये रस्ते से गये जो कि चट्टानों को काट २ कर बनीं थी ओर जो एक खाड़ी मे से गई थी इस खाड़ी में बहुत अच्छे २ पेड़ एक जलाशय के निकट चट्टान पर जमें थे । हम लोग गाड़ी पर से उतर कर एक काठ के पुल पर से टहलते २ एक छोटी ओर सुथरी झोपड़ी में जिस को कि डचिस ने घोंघे वगैरह से शोभित किया था गये हम लोग एक चार पहिये के दोहरी गाड़ी पर सवार होकर जिसमें बहुत शोर होता था ओर जिसमे बहुत से लोग बैठे थे फिर गये मैं आलबर्ट ओर ड्यूक के बीच में एक ओर बैठी थी ओर डचिस लेडी जोसेलिन लाट क्लेरेन्डन ओर लेडी वाटरफोर्ड दूसरी ओर । जार्ज पीछे बैठा था ओर मुसाहेब कोचवान के दोनो ओर बैठे थे । ज्योंही हम लोग मकान पर पहुंचे त्योंहीं ही मेहमानदोरें से रुखसत होकर एक दूसरी राह से जो कि लिफी के किनारे की ओर से गई हे कलेनसो के पार्क में से होकर फीनिक्स पार्क को गये यहां बहुत से बीच के मनोहर वृक्ष हैं

और इन से बहुत सी जमीन ढप गई है और आगे बढ़कर सड़क और नदी के किनारे पर सुंदर सिकामोर के वृक्ष थे । हम लोग लूकन के गांव में से होकर गये जहां कि सब चीजे भली भांति सजी थीं और बे और लारल के मेहराब बने थे । हम लोग स्ट्राबेरीबेड के नीचे होकर गये इनके बड़े किनारे जिन के नीचे कि बैठने की जगह बनी है और लोग जो डबलिन से स्ट्राबेरी खाने के लिये आये थे अत्यंत अद्भुत देख पड़ो पांच बजने के कुछ बाद हम लोग मकान पर पहुंचे ॥

विकटोरिया और आलबर्ट के छत पर लाकरैन में ।

अतवार अगस्त ११ ॥

हम लोग एक बहुत खराब और छोटी राह से आकर यहां ठहरे । अब कुछ शुक्रवार का वर्णन करते हैं । छः बजने पर हम लोग फीनिक्स पार्क से जहां हम लोगों का काल हर्ष से व्यतीत हुआ था आगे बढ़े लाट क्लेरेन्डन और दो बड़े लड़कों के जो कि हमारी गाड़ी मे बैठे थे साथ और कुछ सवारों के साथ डबलिन के रेलबे स्टेशन को गये । नगर में बड़ी भीड़ थी और लोग बड़े उतसाह युक्त थे । जार्ज हम लोगों को वहां मिले और उनको उस गाड़ी मे जिसमें क्लेरेन्डन लाट लेन्डडौन और बिबियां हम लोगों के साथ थीं बैठा लिया । हम लोग बहुत जल्दी किंग्सटौन में पहुंचे इहां पर इस समय में उतनेहीं मनुष्य थे और उतनहीं उत्साह था जितना कि जब हम लोग यहां से रवाना हुए था । हम लोग किंगसटौन में धीरे २ बढ़कर पेडलवाक्स पर

खड़े हुए यहां लोग बड़ा होरा मचा रहे थे और तोपें जहाज़ पर से छूटतीं थीं। मैं जब वहां से चलने लगी तब अपने रुमाल को बतौर उनकी खैरखाही कबूल करने के लिये हिलाया। हम लोग शीघ्रहि होथ और येरलेन्ड ऐ में से होकर गुजरे जहाज़ बहुत धीमे २ चलता था यद्यपि समुद्र में हलोरा था और रात अंधियारी थी और पानी बरसता था। हम लोग डरते थे कि तूफान आवेगा॥

शनीश्चरवार अगस्त १२॥

हम लोग बेलफास्ट के लंगर गाह में चार बजे पहुंचे। हवा बड़े जोर से उठी और सुबह भी बहुत खराब थी हवा जोर से बह रही थी। रात को हम लोग आराम से नही सोये हवा खराब ही होती गई यहां तलक की तूफान सी हो गई और इसी कारण यह भी ठीक न था कि हम लोग बेलफास्ट से फिर आने के बाद स्काटलैंड में जायंगे हम लोगों का इरादा तो ऐसाही था। मेयर और जरनैल बेन बृग जोकि खाना खाने के बाद जहाज़ पर आये हम लोगों से मिले। सवा एक बजे हम लोग बीबियों के साथ फेयरी पर गये। यद्यपि हम लोग नौका में दोही मिनिट थे तिस पर भी चढ़ने उतरने में बड़ा झटका लगता था और नौका का इधर उधर हिलना भी बहुत बुरा मालूम पड़ता था। हम लोगों को एक खेमें में बहुत देर तलक रहना पड़ा क्योंकि तरगें इतनी बड़ी उठती थी कि फेयरी बिलकुल फेन से छिप जाती थी। हम लोग हालीउड और कारिकफर्गस के बीच से जो कि विलियम तीसरे बादशाह के पहले पहेल उतरेन का स्थान होने के कारण मशहूर है होकर आधे घंटे में बेलफास्ट पहुंचे सूर्य्य भगवान की कृपा से नजर पड़ने लगा॥

हम लोग उतरने के स्थान पर जहां कि बहुत से लोग इकट्ठा थे

और जो कि खूब सजा था किनारे २ रहे । लाट लन्डनडरी जहाज़ पर आये और मेयर जिस को हमने नैट बनाया प्राटेस्टेन्टमतावलम्बी डोन के पादरी काथलिक पादरी डिनविर जो कि बहुत अच्छे और सुशील हैं इस कौन्टी के शेरिफ और मेम्बर लोग लाट डानीगाल जिसके हाथ में करीब बिलकुल के बेलफास्ट है डाकटर हेनरी जो कि नये कालिज से आये थे और बहुत से प्रेसबेटीरियन लोग (क्योंकि इस वर्ग के मनुष्य यहां बहुत हैं) अभिवादन पत्र ले लेकर आये । लेडी लन्डनडरी और उस की लड़की भी जहाज़ पर आयी। जहाज़ पर से तख़्ता जिस पर से हम लोग उतरनेवाले थे उतारने में देरी लगी क्योंकि यह बहुत बड़ा बना था परन्तु कई छोटे तख़्ते बिछा दिये गये और हम लोग सुबिस्ते से किनारे उतरे । उतरने का स्थान खूब सजा था और अच्छे २ बिछौने बिछे थे । लाट लन्डनडेरी की गाड़ी में मैं दोनों बीबियों के साथ सवार हुई लाट पीछे दो पियादे रेनविक और बिरबेज के साथ बैठे थे ये दोनों बड़े लांबे और भारी मनुष्य हैं और वे तीनों बड़े कुविस्ते से बैठे रहे होंगे । नगर फूलों परंदो और जयसम्बन्धी मेहराबों से सजा था । दालानो में बहुत से मनुष्य थे और उन्हों ने हम लोगों की पेशवाई हर्ष से की यहां के लोग बहुत से कौमों से मिल कर पैदा हुए हैं और यहां कि स्त्रियां सुंदर नहीं होती हैं इस काल पर्यन्त मैं कहने को भूल गई थी कि उन्होने उन मेहराबों पर अपने प्रिय सिडमिल फेलेटी पदों को लिख दिया था जिसका अर्थ ऐरिश भाषा में अगणित प्रकार से अभिवादन करना है । यह भाषा गेलिक भाषा के समान है और लोगों की सामान्य भाषा है । पुरातन काल की बहुतसी पुस्तकें इस भाषा में लिखी हैं । यद्यपि गेलिक भाषा को लोग सर्वदा बोलते तथापि केवल

पचास बरस से इसमें पुस्तकें लिखी जाती हैं । वे लोग बारंबार सिड मिली फेलटी को अनेक प्रकार से कहते थे लाठ डानगल घोड़े पर चढ़ कर गाड़ी के एक ओर चलते थे और जर्नैल साहिब दूसरी ओर । हम लोग पटुआ और छाल का कपड़ा देखने के लिये लिनन हाल में ठहरे । लाठ डोनसैर और और बहुत से लोग वहां हम लोगों की पेशवाई की और बहुत से कमरों में से लिवा गये जहां हम लोग इन बस्तुओं की बनावट के शुरू से आखिर तक देखा । पहिले पैाधे को देखा तब रंगे हुए पटुये को देखा और फिर बने हुए पटुये को देखा । उसके पिछे छाल के कपड़े किमरिख और और दूसरे प्रकार के कपड़ों को देखा । सचमुच इनके देखने से बड़ा हर्ष होता है और यह अद्भुत बात है कि कैसे अच्छे कपड़े अब बनते हैं । फिर हम लोग अपनी गाड़ी पर सवार हुए । इस समय लान्डनडरी साहेब अपने अप्रिय स्थान पर नहीं बैठे । हम लोग बोटानिक बाटिका की ओर से गये और वहां पर नये पाठशाले को जिसमें पढ़ना पढ़ाना अकतूबर महीने से होगा देखने के लिये गाड़ी में से बाहर निकलकर ठहरे । इस पाठशाला का मकान अत्यंत सुंदर है । हम लोग बहुतसी गलियों में से होकर अपने खाना खाने के जगह पर आये । बालफास्ट का नगर बहुत अच्छा है । इसमें बहुत से अच्छी २ इमारतें हैं इनमें बंकघर और एक्सचेन्ज घर हैं । यह नगर लिवरपूर और मेनचेस्टर के तुल्य ऐरलेन्ड में समझा जाता है मैं कान्सटबलरी का हाल लिखने को भूल गई थी । इन लोगों की संख्या १३,००० है और ये प्राय: ऐरिश रोमनकथालिक हैं । परसाल की लड़ाई में इनमें से एक मनुष्य ने भी ऐरलेन्ड के बलवाइयों को सहायता नहीं दी ॥

हम लोग बड़े हर्ष के साथ यहां से आगे बढ़े और साढ़े छ बजे विकटोरिया और आलबर्ट जहाज़ पर पहुंचे । हवा बड़े जोर से बह रही थी और इस कारण जहाज़ के भीतर जाने और बाहर आने में उतनही तकलीफ पड़ी जितनी कि पहिले पड़ी थी । हम लोगों ने यह बिचार किया कि यदि हवा तीन चार बजे तक न कम होजायगी तो हम लोग जहां थे वहीं रात को बितावेंगे । बहुत सी हर्ष की आग आसपास के पहाड़ों पर और किनारों पर बरती थी ॥

अतवार अगस्त । २ ॥

दिन अच्छा न था और अच्छे होने की कुछ आशा भी न थी इसलिये हम लोगों ने दो बजे लाकरयन वा लामलश को जाने का कस्द् किया । साढ़े दस बजे लाट एडाकुस ने धर्म्म की बातें पढ़ी इस समय दो बड़े लड़के यहां मोजूद थे । शहर और देश के प्रतिष्ठा के लिये में बर्टी को उबलिज का लाट बनाना चाहती हूं इसको कोई ऐरिष पदवी नहीं है परन्तु स्काच कई एक हैं ये पदवियां पहले पहल स्काटलेंड के बादशाह के अधिकार में थीं और जिन्हें को हम ने जेम्स स्काटलेंड के छठे और इंगलेंड के पहले बादशाह से पाया है । हमारे पिता के पदवियों में से ऊपर कहीं पदवी एक थी सफर के लिये जहाज़ पर तैयारी खूब न थी किश्तियां उठा ली गयी थीं और सीढी जिस पर से हम लोग बड़े सुबिस्ते से चढ सक्ते बहुत नजदीक लगायी गई थीं बिलकुल कालीन उठा दिये गये थे और सब चीज ढांप दी गई थी सचमुच मेरे डर कारण विना न थे । दो बजे हम लोग चले और में जहाज़ के नीचे कमरे में गयी और लेट रही परन्तु जिस वक्त जहाज़ लगड़गाह के बाहर हुआ पैंतालीस मिनिट तक इतने जोर से

इधर उधर डगमगाती थी कि बहुत डर मालूम होता था और दो ऐसी तरंगे जहाज़ पर से गुजरी कि मैं कभीं न भूलूंगी । परन्तु धीरे २ तरंग का उठना कम हो गया और पांच बजे हम लोग लाक रैन में पहुंचे और भगवान की सफर के अन्त में पहुंचने पर शुकुरगुज़ारी की । आलबर्ट हमारे पास आये और मैं उनके साथ जहाज़ के छत पर गई उसने हम से कहा कि कितना भययुक्त सफर हुआ । पहला बड़ा तरंग जो जहाज़ के ऊपर से गया उसने सब को हर तरफ गिरा दिया । छोटा अफी * गिरपड़ा और जहाज़ के छत पर उतिराने लगा और भीग गया क्योंकि छत पर पानी भर आया था । आलबर्ट ने मुझ से कहा कि जब बड़े २ तरंग जहाज़ के बगल में दिवाल के तरह उठ २ कर लगते थे तो बड़ा भयानक मालूम पड़ता था । हम लोगों ने लाकरयन में इतना आगे बढ़ के लंगड़ न डाला जितना कि दो बरस पेश्तर डाला था यह बहुत अच्छा लंगड़ डालने का स्थान था और हम लोग बड़े सुख से रहे । आलबर्ट किनारे गये ॥

सोमवार अगस्त १३ ॥

हम लोग सुबह चार बजे रवाना हुये और जहाज़ धीरे २ अच्छी तरह से चली जाती थी । खाना खाने के वक्त पर हम लोग क्रेड में पहुंचे दिन अच्छा न था और तरंगों के कारण किनारे कि चीज़े दिखलाई न दीं । हम लोगों ने ग्रेनाक को बाईं ओर छोड़ दिया और लाक गाइल में कुछ दूर चढ गये जो कि लाक लांग में जाकर फैल जाती है यहां बड़ा सुहावना था यह बड़ा अद्भुत जान पड़ता है कि इस लाक में जो कि बड़ी सकरी है और जो कि चट्टान युक्त पहाड़ों के ठीक नीचे

* शाहज़ादा आलफ्रेड ॥

है इतना गहरा पानी है। हम लोग फिर फिरे ओर लाक लांग में गये जो कि बहुत रमणीक है ओर जिस से मैं बहुत परिचित थी। हम लोगों ने अरोकर (जहां से झील आरम्भ होती) में जहाज़ छोड़ दिया ओर लाक लोमंड जाने का इरादा किया जहां कि एक धूयें की जहाज़ हम लोगों के लिये लगी थी परन्तु इस बीच में पानी बडे जोर से बरसने लगा। हम लोग मुफ़ में एक घंटा ठहरे ओर यह कसद किया कि खाना खाने के बाद तीन बजे चलने की कोशिश करेंगे। हम लोगों ने खाना खाया ओर किश्ती पर सवार हुये क्योंकि बादल कुछ खुल गया था परन्तु फिर पहले से जोर से भी बरसने लगा ओर हम लोग रंज करके फिर आये परन्तु आलबर्ट एनसन सर जेम्स क्लार्क ओर कप्तान रा-विन्सन साहेब के साथ उसी वक्त चले गये। वोंही बादल खुल गया ओर मैं रंजीदा हुई कि मैं न गई परन्तु इसके बाद कई एक बड़े २ झकोरे हुये। हम लोग चार बजे के कुछ पहले आरोकर से रवाना हुये ओर फिरते समय लाक लांग बहुत सुन्दर मालूम पड़ती थी॥

पर्थ मंगलवार अगस्त १४॥

हम लोगों ने कल रोजनीथ की खाड़ी में जो कि रोजनीथ के नज-दीक है ओर जो बहुत अच्छी जगह है लंगड़ डाला यह खाड़ी उन पहाड़ों के तरफ दीख पड़ती है जो कि लाक गायिल में हैं। इनमें से एक आरगेल के ड्यूक का वेलिंग ग्रोन कहाता है। आलबर्ट आठ बजने के थोड़ीही देर बाद लाक लोमंड को अच्छी तरह देख भाल करके फिर आये ओर यद्यपि बहुत झकोरा हो रहा था तिस पर भी उन्होंने रावण्य की गुफा को देखा। हम लोगों के साथ कप्तान बिदी जो कि सन् १८४७ इसवी के सफर में साथ थे ओर जो कि इस सफर में भी हम

लोगें के मार्गदर्शक थे कप्तान कृर्सापिन और कप्तान राविन्सन जिन से कि सुबह भेट हुई और जो कि लाक लोमंड में आलबर्ट के मार्गदर्शक थे और जो कि हम लोगें के भी सन् १८४७ इसवी में थे खाना खाया और हम लोग बर्फ के चट्टान वगैरह के बनावट की बहुत सुहावनी बातें करते थे कप्तान बीची जो कि बड़े बुद्धिमान पुरुष और जो कि सारी दुनिया घूम चुके हैं भी बोलते थे । ये सर एडवर्ड पेरी के साथ उत्तर ध्रुव में गये थे और कहते थे कि चार महीने तलक इन लोगें ने दिन न देखा । इन्हें ने जहाज़ पर बर्फ इकट्ठा करके उसको तख़्ते से ढांप दिया इसलिये कि ठंढ न आवे ॥

बालमोरल बुधवार अगस्त १५ ॥

यह एक स्वप्न सा जान पड़ता है कि हम लोग अपने हैलेंड के मकान में फिर आये यह सच मुच नहीं जान पड़ता है कि हम लोग एक वर्ष पहले यहां थे अब मैं कल के समाचार को लिखती हूं । जब नव बजने को १५ मिनिट बाकी था हम लोग फेयरी पर चढ़े और यद्यपि पानी जोर से बरसता था और हवा बह रही थी तिस पर भी क्लैड के चढाव से होकर ग्रेनाक पहुंचे ग्रेनाक में पहुंचने के पहले हवा तूफान् सी बह रही थी । हम लोगें ने ग्लासगो के बन्दर से होते हुये डम्बारटन और यकेसीन पहुंचे । यहां नदी बहुत सकरी है और बहुत टेढी मेढी होकर बहती है और जब ग्लासगो के बहुत पास आगये तब यह देख पड़ने लगा । ज्यों २ हम लोग नज़दीक पहुंचे त्यों २ हम लोगें ने लोगें को समुद्र के तट पर अथवा समस्थान पर खड़े देखा उस समय बड़ा सोहावना लगता था जब कि मनुष्य जो कि किनारे पर खड़े थे हम लोगें के जहाज़ के कारण उठी हुई छोटी २ लहरें को देख कर भागते परन्तु प्राय: गिर पड़ते थे ॥

जब हम लोग ग्लासगो में ग्यारह बजे पहुंचे दिन जो कि पहले खराब था अच्छा होगया और बराबर ऐसाही रहा । बहुत से लोग अभिवादन पत्र ले ले आये परन्तु सब से पहले लाट प्रोवोस्ट जिन को कि हम ने करनैल गोरड़न के तलवार से नैट बना दिया था अभिवादन पत्र लेकर आय इनके पीछे इस देश से एक आया फिर पादरियों के तरफ से आया और अन्त में सौदागरों के तरफ से। इसके बाद हम लोग तुरन्त उतरे और उतरने का स्थान खूब सजा था। दोनों बड़े लड़कों के साथ हम लोग गाड़ी पर सवार हुये और दोनो छोटे पीछे २ आते थे । एलिसन साहेब जो कि बड़े पौराणिक हैं और जो कि शेरिफ है हमारी गाड़ी के एक तरफ सवार होकर चलते थे और दूसरी तरफ जरनैल रिड़िल जो कि स्काटलेंड में फौज के प्रधान हैं। भीड़ बड़ी और उच्चंड थी परन्तु इन्तिजाम बहुत अच्छा था । एलिसन साहेब ने कहा कि पांच लाख मनुष्य वहां थे। शहर बहुत अच्छा है यहां सड़के पत्थर की बनीं हैं और बहुत अच्छी २ इमारतें और गिरजे भी हैं । हम लोग एक पुल पर से गये जहां से दोनों तरफ के घाट बहुत अच्छी तरह से दिखाई देते थे आलबर्ट ने कहा कि यह ठीक पारिस के तरह हैं । यहां बहुत से बड़े २ मकानात और दूकाने हैं और जहाज़ें भी बहुत हैं । हम लोग पुराने गिरजे में गये जहां कि बूढे प्रिन्सिपल मेकफारलेन ने हम लोगों की पेशवाई की और जब की फाटक से टहलते जाते थे हम लोगों को उन्हों ने एक बड़ी भारी चिमनी दिखलायी यह पृथ्वी पर सब से ऊंची है और यह एक यन्त्रगृह के अधिकार में हैं। गिरजा बड़ा सुन्दर है और इस में गाने का स्थान ठीक प्रेसबेटीरियन गिरजों के गाने के स्थान के सदृश है । लोगों ने हम लोगों को गुफायें दिखलायीं और पादड़ियों के गाड़े जाने

का स्थान भी दिखलाया यह बहुत अच्छी अवस्था में है । यहां का शिल्प कर्म बहुत अच्छा है । इसी गुफा का बर्णन राबराय नामक पुस्तक में लिखा है यहां पर राबराय फ्रेन्कआसबेनिडस्टन से कहा था कि वह बड़े खतरे में था इसमें सेन्ट केन्टीजर्ण का जिनको लोग प्राय: सेन्टमन्गो कहते स्मरणस्तम्भ है फिर हम लोग अपनी गाड़ियों पर सवार होकर युनीवर्स्टी के मकान के देखने के लिये गये । बहुत से बुद्धान और अमीर लोग इसी युनीवर्स्टी के पढ़े हुए हैं । यहां हम लोग पहुंचे और लोगों ने अभिवादन पत्र को पढ़ा । हम लोग यहां दो तीन मिनिट के लिये ठहरे और फिर एक्सचेंज घर को गये जिसके सामने मरोचिट की बनाई हुई घोडे पर सवार ड्यूक आफ वेलिंगटन की मूरत रक्खी है सचमुच यह मूरत ठीक ड्यूक साहिब की नाई है और भली भांति बनी है । हम लोग रेलवे स्टेसन पर पहुंचे और तुरंतही वहां से रवाना हुए । कुछ दूर पर स्टरलिंग से आगे बढ़े और चार बजने के कुछ पेस्तर पर्थ में पहुंचे जहां लोग खैरखाह हैं । हम लोग चारों लड़कों को गाड़ी पर बैठाकर जार्जइन को गये जहां कि हम लोगों को वही कमरे मिले जो कि पहिले मिले थे । आलबर्ट तुरंतही बन्दीगृह देखने को गया और ६ बजे हम लोग लन्डन की सड़क की ओर से जो कि मानक्रूफी को गयी है गाड़ी पर चढ़कर गये । यहां से सब चीजें अच्छी देख पड़ती थी विशेष करके पर्थ और टाय का पुल ॥

बुद्धवार अगस्त १५ ॥

आठ बजने को जब १५ मिनिट बाकी थे तब हम लोग यहां से रवाना हुए । दो लड़के और विकी हम लोगों के साथ गाड़ी में थी । एलिस बीबियों के साथ हम लोगों के पीछे २ आती थी । यह यात्रा

बहुत बड़ी थी परंतु हम लोग अच्छी २ जगहों में से होकर गये । जब हम लोग पर्थ से आगे बढ़े तब ग्रेम्पियन पहाड़ को देखा बलेर-गोरी में जो की १५ मील पर है हम लोग ने अपने घोड़ों को बदला तब स्पिटिल ग्लेन्सी में पहुंचने के लिये हम लोगों को २० मील की यात्रा करनी थी । पहिले हम लोग लेफटेनेन्ट क्लार्क रेट्टे के मकान के पास से जिसे क्रेगहाल कहते हैं गये । इस मकान पर से वह गुफा जिस पर हम लोग गाड़ी पर सवार होकर गये थे देख पड़ती है इसके उपरान्त हम लोग हैलेन्ड के मुल्क में गये जिसमें बहुत से चट्टान पूर्ण पहाड़ियां थीं और वहां से स्पिटिल आफ ग्लेन्सी को रस्ता मुड़ी है इसको हम लोग मुशकिल से गांव कह सक्ते हैं क्योंकि इसमें सिर्फ एक सरांय और दो तीन झोपडियां हैं । हम लोग सरांय के पास गाड़ी पर से उतरे और यहां फारक्वहारसन और उसके लड़के और कुछ उसके आदमियों से भेंट हुई । यहां हम लोगों ने कुछ खाना खाया और फिर यहां से रवाना हुए । दूसरी १५ मील की रस्ता जो कि कासलटन को गई है बड़ी खराब है और रात को इस भयानक और जंगली राह से जाना बड़ी भय की बात है । यह रस्ता बड़ी ऊंची और नीची और फेरफार खाकर गई है । एक मोड़ को डेविल्स एलबो कहते हैं । यहां पर हम लोगों को फिर वे फारकुहारसन के थोड़े से मनुष्य जो हम लोगों के आगे बढ़ गये थे और कुछ जो सरांय से हम लोगों के पीछे आते थे मीले । ये मनुष्य चट्टानों और पत्थरों पर बड़ी फुर्ती से जो कि हैलेन्डों में प्रसिद्ध है जाते थे । वे लोग हम लोगों के साथ उस काल तक थे जब कि हम लोग अच्छे प्रकार से आगे बढ़ सके । हम लोग एक बड़ी अच्छी रस्ता से जिसे केरनवाल कहते हैं होकर

गये । यहां पर बड़ी वृष्टि हुई । जब हम लोग कासलटन में पहुंचे तब दिन सफा था और फिर हम लोगों ने अपनी गाड़ी के पट को खोल दिया । यहां पर हम लोगों से सर एलेकज़ांडर उफ और डूक आफ लीड और उनके अनुचरों से भेंट हुई । लेडी डफ एगनीस डफ साहिब और उनकी बीबी, मिस फारकुहारसन और बहुत से लड़के और डचेज़ लीड़ ये सब गाड़ी के पास आये । कासलटन से बालमोरल तक की रस्ता और विशेष कर वह भाग जो कि बेलक्रभूई से गया है हम लोगों को अच्छे प्रकार से मालूम था और हम लोगों को उस मनोहर जगह को फिर देख कर बड़ा आनन्द हुआ । स्पिटल आफ ग्लेनसी में हम लोगों से ग्रेन्ट से जो कि हमारे साथ बराबर घोड़े पर आये थे भेट हुई थी । बालमोरल के दरवाजे पर मेके खेल रहा था और मेकडो-नाल्ड बिलकुल कपड़ा पहिने खड़ा था । हम लोग यहां चार बजने के करीब पहुंचे ॥

जहाज़ की सैर

विकटोरिया और आलबर्ट पर से
डार्टमथ बृहस्पतिवार अगस्त २० १८४६ ॥

हम लोगों ने जहाज़ पर से बहुत से स्थानों को डेवनशैर के मनोहर किनारे पर देखा यहां पर हम लोग तीन बरस पहले आये थे । हम लोगों ने सीटन सिडमथ जहां दस मिनिट हम ठहरे अक्समथ टेनमथ और और स्थानों को भी रास्ते में देखा । उसके बाद हम लोग बावीकूम्ब नामी एक छोटी खाड़ी में आये और यहां एक घंटा ठहरे । यह स्थान जिसको हम लोगों ने पहले दूर से देखा था बहुत सुन्दर है ।

इटली की नाई यहां लाल चोटियां चट्टानें और वृक्ष युक्त पहाड़ियां हैं इसके देखने से चित्तरचना में उस स्थान का ख्याल आया कि जहां देवकुमारी आती है और वहां बड़े २ चट्टानें और गुफायें हैं और समुद्र इतना गहरा है कि पानी ज़रा भी न हिलता। हम लोगों ने जहाज़ पर से उतरने और पहाड़ी पर टहलने का इरादा किया परन्तु पानी बड़े जोर से बरसने लगा और हम लोगों ने जैसा चाहा था वैसा न कर सके। हम लोगों ने उस जगह की जो कि टारबे के साम्हने है तसवीर खींचने की कोशिश की। लड़के लोग बहुत सुन्दर और प्रसन्न चित्त देख पड़ते थे। हमने अंगरेजी तवारीख का एक छोटा सबक विक्की को पढ़ाया। साढ़े एक बजे हम लोग फिर अपने राह पर चले और टारक्के को बहुत अच्छी तरह देखा यह बहुत अच्छा है। समुद्र में तरंगें ऐसी उठती थीं और हवा इस जोर से बहती थी कि हम लोगों ने प्लिमथ तीसरे बार जाने का इरादा छोड़ दिया और बरसते पानी में रमणीक डार्टमथ को चले जहाज़ की छत पानी से भरी थी और हम लोग छाता लगाये थे लड़के सब वस्तु को देखने के लिये बहुत उत्सुक थे। यद्यपि पानी बरस रहा था तिस पर भी यह स्थान मनोहर दिखाई देता था नगर में प्रवेश करने के पूर्व्व चट्टानें जिन पर बहुत जंगल है और गिरजा और किला देखलाई देता है। इसके देखने से हम लोगों को सुन्दर रैन इस पर के नष्ट किले और लरली चेत आई। इह समय मैं जहाज़ के नीचे कमरे में लिख रही हूं और हम लोगों के चारो ओर बहुत सी किश्तिया हैं॥

ग्लिमथ का लंगड़ गाह ॥

शुक्रवार अगस्त २१ ॥

साढ़े ६ बजे हम लोग रवाना हुये और देखने से यह जान पड़ा कि समुद्र बहुत स्थिर था और सूरज बहुत चमकाहट के साथ दिखाई देता था इस लिये हम लोगों ने उठने की तयारी की दिन बहुत अच्छा था परंतु तरखा बहुत था साढ़े नव बजे हम लोग ग्लिमथ के उम्दा लंगड़गाह में पहुंचे और फिर राज कम्ब के पहाड़ी के नीचे लंगड़ डाला। यह पहाड़ी मनोहर वृक्षों और पैन वृक्षों के कारण जिनकी जड़ कुछ पानी मे है और समयों की अपेक्षा इस समय में अत्यंत सुंदर देख पड़ती है। मैंने अपने कपड़ों को बदल कर अनेक चिट्ठियों और राज्यकार्यसंबन्धी पत्रों को पढ़ा और उसके उपरांत जहाज़ पर जाकर अफसरों अर्थात् नौकापतियों और जरनैलों को देखा। मैं ने विकी को सबक पढ़ा दिया और कुछ लिखा। लड़कों को बीबियों और साहिबों के और सर जेम्स क्लार्क के साथ विकटोरिया और आलबर्ट जहाज़ पर छोड़ कर हम लोग डेढ़ बजने के पीछे फेयरी जहाज़ पर गये। पहिले कुछ दूर तक सेन्टजर्मन्स नदी में जाकर जिसके किनारे पर छोटा सा जंगल है हम लोग टमार को गये। ट्रेमेन्टन कासल जो कि हमारे दाहिने ओर था और जाट्ठ जो कि बायीं ओर डूक आफ कार्नवाल के अधिकार में है बहुत मनोहर हैं हम लोग यहां ठहरे फिर पीछे फिरे और टमर को गये। पहिले इसकी जमीन समथर दीख पड़ती थी। जब आगे बढ़े तब पहाड़ियां जो जंगलों से घिरी है वृक्षें जिनकी जड़ पानी में है और नदियां जो फेर फार खा कर गई हैं और

झीलों की नाईं देख पड़ती हैं ये सब अत्यंत मनोहर देख पड़े । इस स्थान में हम लोगों ने फिर रैन नदी के देखने के लिये जाने का विचार किया । हम लोग अनुमान करते हैं कि यह नदी रैन की नाईं नहीं है । आलबर्ट ने समझा कि यह डेनूब की नाईं है । इस जगह का सबसे उत्तम स्थान सालटास के निकट है जो कि एक छोटा और साधारण रूप से बना हुआ नगर है । दाहिनी ओर ज्यों २ बढ़ते जाव त्यों २ यह अंगरेजी गांवों के समान नहीं है । इससे आगे बढ़कर टेवी नदी का मुख है और यहां पर यह नदी अत्यंत मनोहर देख पड़ती है । हम लोग बहुत से स्थानों की ओर से जिसमें मनुष्य काम करते थे होकर गये बायें ओर कुछ बढ़ कर हम लोग पेन्टिलो के गढ़ी में पहुंचे जो कि एक ऊंचे स्थान पर जो कि उस नदी के पानी के किनारे तक जंगल से घिरा हुआ है जो उसके ऊपर और नीचे से फेर फार खाकर गई है । आलबर्ट ने कहा कि इस स्थान को देखकर ग्रीनवर्ग का जो कि डेन्यूब के तट पर स्मरण होता है । कुछ आगे बढ़कर हम लोग एक छोटे से मनोहर गांव और टहरने के स्थान में जिसको कथोली कहते हैं और जो कि जंगल से घिरे हुए नदी के तट पर है और जिसके एक ओर गुफा है आये । यहां नदी बड़ी सकरी है । यहां पर हम लोग जमीन पर उतरे और गाड़ी पर चढ़कर एक ढालुई पहाड़ी पर होते हुये वृक्षों के नीचे से एक अद्भुत मकान पर जो कथोली में है गये और यहां पर गाड़ी पर से उतरे । यह प्रत्येक रूप से अद्भुत है यह उसी अवस्था में है जिसमें कि यह हेनरी ७ के समय में था इसकी बड़ी रक्षा कियी जाती है और इसके पुराने कमरों में तसबीरें लटकी हुई है । वृक्षों के नीचे से हम लोग गाड़ी पर सवार होकर एक दूसरी रस्ता से

मनोहर गुफा के ऊपर होकर उस स्थान पर गये जहां से रवाना हुये थे और नदी के मुहाने के ओर गये । संध्या मनोहर थी सूर्य चमकता था और समुद्र और आसमान नीला देख पड़ता था । हम लोग शीघ्रही पहुंचे परंतु खाना खाने को जहाज़ थेटिस पर देर हो गई थी । ज्यों मैं इस जहाज़ के निकट पहुंची त्यों मुझ को उस काल का स्मरण हुआ जब मैं यहां तीन बरस बीते थी । यह जहाज़ अगणित नौकाओं से घिरी थी यहां तक कि हम लोग एक नौका पर सवार होक इनके बीच में से होकर जहाज़ पर गये । संध्या का समय मनोहर था आसमान सफा था और गर्द नहीं उड़ती थी परंतु नौकाओं के निकट जो हमारे चारों ओर थीं बड़ा होरा था । लाट और लेडी मौंट एजकूम्ब और सर जेम्स क्लार्क ने हम लोगों के साथ खाना खाया ।

ग्रिमथ सनीचर बार अगस्त २२ ॥

आलबर्ट छ बजे उठे क्योंकि वे डार्टमूर के जंगल को जाने वाले थे । दस बजे मैं जहाज़ पर दोनों लड़कों बीबीयों वेरन स्टाकमर और लाट आलफ्रेड पेगट के साथ चढ़ कर एजकम्ब के पहाड़ी को गयी जहां कि लेडी मौन्ट एजकम्ब ने उसके दोनों लड़के बहिन और भतीजियों ने हमारी पेशवाई की उतरने के स्थान के कुछ आगे लाट मौन्ट एजकम्ब ने भी पेशवाई की । जहां हम लोग उतरे वहां बहुत भीड़ थी और मैं आलबर्ट के बिना आयी थी इससे बहुत चौकन्नी थी । मैं लड़कों और लेडी मौंट एजकम्ब के साथ गाड़ी पर सवार हुई । लाट मौंट एजकम्ब आगे २ चलते थे और दूसरे लोग पीछे पीछे । हम लोग उस सड़क से बहुत खुशी से गाड़ी पर गये जिस के नीचे खाड़ी है इस जगह से चारोंओर ऐसी सुन्दर २ वस्तु देख पड़ती हैं कि कहा नहीं

जाता यह सड़क वृक्षों के नीचे और आस पास से होकर जाती है। यहां हम लोग तीन वर्ष पहले आये थे परन्तु यह सर्व्वदा देखनें में भला जान पड़ता है। दिन बहुत गर्म था और कुहिरा भी पड़ता था। घर पर हम लोग ग्यारह बजे पहुंचे। लड़के दायियों और और लड़कों के साथ छांह मे गये और मकान में खाना खाया पर मैं तो दालान्ही में रही यहां बहुत अच्छा था और बहुत अच्छी तसवीरें लगी थीं इसमें एक द्वार बगैचे में जाने के लिये है। इस पर से समुद्र की वस्तु भली भांती देख पड़ती है मैं ने इन सबों की तसबीर खींचा। बारह बजे के थोड़ी देर बाद हम लोग जहाज़ पर फिर आये जो कि छ बजे से नावों से घिरी थी। एक बजे आलबर्ट खैराफियत से फिर आये अपने छोटे सैर से बहुत प्रसन्न थे और उन्हों ने कहा कि डार्टमूर का जंगल स्काटलेन्ड के सदृश है। दे। बजे हम दोनो फिर बीबियों और साहेबों के साथ और लड़कों के बिना मौन्ट एजकम्ब के उतरने के स्थान पर गये हम लोगों की पेशवाई उसी प्रकार से हुई जैसे कि पहले हुई थी फिर मकान को हम लोगों ने सिधारा। यहां चे-स्टनट वृक्ष के ऐसे सुन्दर और ऊंचे पेड़ हैं कि पृथ्वी पर कहीं नही है यहां नीचनामक वृक्ष भी बहुत होता है यह बहुत लम्बा और सीधा होता है और डालियां ऊपर की ओर फैलती हैं। हम लोग बराम्दे में टहलते थे और लेडी मौन्ट एजकम्ब के छोटे कमरे जो बराम्दे के अन्त में है देखा यह बहुत मनोहर है और इसमें बहुत सी लेडी की इकट्ठा की हुई अच्छी २ चीजे हैं फिर हम लोगों ने उस कोठरी में जहां सर जोशुवा रेनाल्ड की खीची हुई कई तसवीरें हैं कुछ खाना खाया। ये सब मौन्ट एजकुम्ब के कुटुम्ब के हैं। इनमें से एक मनुष्य

उसका बड़ा सहायक था । सर जेशवा ग्रिमथ से कुछ मील दूर पर पैदा हुआ था । उसी कमरें मे इसकी वे तसबीरें जिसको कि यह इस विद्या सिखने के समय खीचा था रक्खी हैं । उनका रंग इस समय तक ज्यों का त्यों है और उसके व्यापार करने के समय की तसबीरें जिनका रंग बिलकुल उड़ गया है और वे तसबीरें जिनको उसने अपनी गलती सुधारने के बाद खींचा था और इस हेतु जिनका रंग बहुत मनोहर है इसी कमरे रक्खी हैं । मकान के समीप के बाटिका में हम लोग ठहरे और तब गाड़ी पर चढ़कर काइस्क को गये । इस जगह जाने में स्थेनयेन और पिनास्टर को देखते हुए गये इन सभों को देखकर आलबर्ट प्रसन्न हुये और हम को लीर साहिब की तसबीरों का स्मरण हुआ काइस्क समुद्र और उस नगर की अपेक्षा बहुत ऊंचे स्थान पर है । यहां से जो कुछ देख पड़ता है सो बहुत मनोहर देख पड़ता है । इस समय समुद्र मानिन्द आईने के था क्योंकि इसमें हलोरा नहीं था । हम लोग यहां से एक मनोहर रस्ते पर से जो कि जंगल और वृक्षों के बीच में से होकर गया है उस स्थान तक गये जहां हम लोगों को हमारी गाड़ी मिली और यहां से गाड़ी पर सवार होकर उस रस्ते से गये जो कि कुछ कारनीस की नाई है । यहां से समुद्र उस स्थान तक देख पड़ता है जो कि हम लोगों के रवाना होने का स्थान था और जहां पर हम लोग लोगों से बिदा होकर अपनी जहाज़ों पर साढ़े चार बजे चढ़े । बेचारा लाट मोन्ट एजकूम्ब गमगीन और सहायता रहित दशा में पड़ा है परंतु बड़ा प्रसन्न रहता है और सब्र किये है । हम लोग अपने लड़कों को लेआने के लिये जहाज़ के छत पर गये और फिर फेयरी जहाज़ पर चढ़ कर लंगड़गाह वा खाढ़ी के जिसमें बहुत से मनोहर स्थान हैं चारो

और घूमे । वहां से केटवाटर में गये और फिर एक नौका में चढ़ कर नदी के और के लाठ मारली के सालट्रम को देखने को गये । इसके उपरांत फिर फेयरी पर चढ़ कर मिल नामक खाढ़ी में सटन पूल और स्येनहौस में गये और फिर साढ़े छ बजे अपनी सैर की नौका पर आये ॥

गरेन्सी की खाड़ी में सेन्टपियर के आगे

गरेन्सी अगस्त २३ ॥

जब हम लोग जागे तो सुबह बहुत सुहावनी थी और हम लोगे को बड़ा रंज हुआ कि यहां एक दिन भी न और रह सकेंगे क्योंकि कौन्सल जो कि २५ तारीख को होने वाली थी सो अब २६ को होगी । हम लोगो ने सोचा कि साढ़े नव बजे हारबी को जाने और सोमवार को असर्बन को जाने के सिवाय कुछ न कर सकते थे । जिस वक्त में कपड़ा पहनती थी तो सोचती थी कि हम लोग फालमथ वा और कोई स्थान देख सकेंगे वा नहीं । आलबर्ट ने समझा कि चेनल के टापुओं मे से शायद कोई देखे और इसी लिये उसने लाठ अडालफस फिट्ज-क्लेरेन्स को बोलाया और यह पक्का हुआ कि हम लोग गरेन्सी को देखेंगे मैं बहुत प्रसन्न हुई क्योंकि मुझ को इस स्थान के देखने की बहुत इच्छा थी ; दिन बहुत अच्छा था । जानैल और एडमिरल जहाज़ पर बिदा होने के लिये आये । सर जे वेस्ट साहेब एडमिरल हैं और मरे साहेब जरनैल हैं । साढ़े नव बजे हम लोग रवाना हुये । समुद्र बराबर ऐसा स्थिर था जैसा कि सन १८४३ में था । प्लिमथ बड़ा खूबसूरत है और हम लोग यहां फिर आवेंगे तो बहुत प्रसन्न होंगे ॥

दो घंटे तलक हम लोग पृथ्वी देखेने की आशा में थे परन्तु कुहिरा बहुत पड़ रहा था और हम लोग नहीं जानते कि कहां थे परन्तु छः बजे फेयरी पर के लोगों ने भूमि देखी और आकर हम लोगों से कहा तब सब जहाज़ें हम लोगों के आगे हो लीं । ज्यों २ हम लोग नज़दीक पहुंचे त्यों २ हम लोग किनारे की सुन्दरता से अचम्भित हुए इसमें बहुत सी चट्टानयुक्त खाड़िया हैं सेन्टपियर नामक नगर जो कि पानी तक पहुंचा है चित्र की नाई बना है । दाहिनी ओर लगड़गाह से सर्क दिखाई देता है और और बढ़ के सेन्टपियर के सामने दो टापू हैं इनका नाम हर्म और जेथू है । वह खाड़ी जहां कि ये टापू हैं बड़ी अद्भुत है । हम लोगों ने सात बजे सेन्टपियर के सामने लंगड़ डाला दोनों टापू हमारे दोनों ओर थे । आठ बजे हम लोगों ने खाना खाया और जब कि जहाज़ के छत पर जाते थे तब देखा कि सम्पूर्ण नगर में रौशनी हुई थी यह बहुत अच्छी दिखाई देती थी और बहुत जल्दी कियी गई होगी क्योंकि हमारे आने की खबर किसी को न थी । यह एक परदेश नगर की नाई बना है । लोग आपुस में फरासीसी भाषा बोलते हैं ॥

अगस्त २४ ॥

सेन्टपियर बहुत अच्छा नगर है यहां के मकानात बहुत ऊंचे और देखनोक हैं और समुद्र के बहुत निकट बने हैं । कालिज और गिरजा यहां के मुख्य इमारतों में हैं । यह टापू जिसका एक कोना समुद्र में बहुत दूर तक घुस गया है और एक छोटा टापू कारनेट जहां कि एक गढ़ी है और जिस के निकट हम लोगों ने लंगड़ डाला था और तीन टापू हर्म जेथू और सार्क ये सब बहुत सुन्दर और अद्भुत हैं हम लोगों ने इनको

घाम में देखा । हम दोनों ने इन्हों की तसवीर खीची और नौ बजने को जब पन्द्रह मिनिट बाकी था बीबियों के साथ नौका पर चढ़े किनारे पर लोग बहुत जमा थे और सुफेद कपड़ा पहने हुए बीबियां "गाड़ सेवदी क्वीन" यह गीत गा रही थी और जमीन पर फूल बिछा रहीं थीं वहीं हम लोग जरनैल नेपियर साहेब को आगे करके गाड़ी तक टहल गये । ये साहेब बहुत अद्भुत देखने में हैं बहुत बुड्ढे लंबे और दुबले हैं इनकी नाक चील्ह के चोंच सी है आखें तीक्ष्ण हैं बाल और मोछ सफेद हो गये हैं । लोग बहुत सुशील और मिलनसार हैं और जब सकरी गलियों से हम लोग गाड़ी पर जाते थे तो बहुत खुशी से पेशवाई किया गलियों में फूल बिछे थे और झंडे खड़े थे और किनारे २ बीस हज़ार गरेन्सी के मजबूत सिपाह खड़े थे इन के साथ बाजा वाले भी थे थोड़े सिपाही घोड़े पर सवार थे ॥

नगर के बाहर खेती बहुत अच्छी है और फूल दूब बहुत हैं । यहां की गलियां पहाड़ी के कड़ाड़े और वे बस्तु जो कि गढ़ी से (जहां कि जरनैल नेपियर ने हम को तालियां दी) देख पड़ती है बहुत मनोरम है । यहां से गरेन्सी की खाड़ी नीचे दिखायी देती है और सामने जेथू और सर्क के टापू नज़र आते हैं । आलडरनी और फ्रान्स का किनारा भी दिखलाता है बायें ओर दूर पर डिलाहोग का अन्तरीप और दाहिनी ओर जरसी दिखलाई देती है । यह टापू बहुत आबाद जान पडता है । नगर में तो लोग अंगरेजी बोलते हैं परन्तु गांव में फरासीसी । सब टापूओं में यही हाल है । ये नारमंडी के ड्यूक के अधिकार में थे परन्तु विलियम दो कांकरर के समय से हम लोगों के अधीन है ।

बादशाह जान* उस वंश के बादशाहों में जिसके मुख्य विलियम दी कांकरर थे अखीर बादशाह थे जो कि यहां आये थे। हम लोग सवार होकर जहाज़ तक आये और फिर चढ़े लोग बहुत होरा मचाते थे। इन्तिजाम बहुत अच्छा था और बड़े राजआज्ञानुवर्ती थे ॥

हम लोग एक बजे के कुछ पहले रवाना हुये और डेढ़ घंटे में आल्डरनी के नजदीक पहुंचे हम लोग बराबर फ्रान्स के किनारे को और डिलाहेग के अन्तरीप को दाहिनी ओर अच्छी तरह देखते आये कास्केट लापिट्स हम लोगों के बायें ओर छूट गया। आलडरनी और दूसरे टापुओं से बहुत न्यारा है यहां चट्टाने बहुत हैं और ऊसर है और वे चट्टाने जो कि समुद्र में और उसके नीचे हैं भयानक हैं ॥

नौके की दूसरी सैर

विकटोरिया और आलबर्ट जहाज़ पर—सेन्टहेलियर्स जर्सी—
सितंबर २, १८४६ ॥

जब सात बज के १५ मिनिट हुआ था हम लोग विकी, बर्टी, लेडी जोसेलीन, मिस कर, मेंडल् यनर, लाठ स्पेनसर, लाठ पालमर्स्टन सर जेम्स क्लार्क (अनसन और करनैल ग्रे ब्लेक ईगिल नामक जहाज़ पर थे) के साथ आसबर्न पियर में जाकर रवाना हुए। समुद्र में बड़ा तरखा था। संध्या का समय मनोहर था परंतु ठंढ बहुत थी। बारह बजने पर हम लोगों ने आलडर्नी को देखा और दो और तीन बजने के बीच में आलडर्नी रेस में जहां जल का बड़ा तरखा था परंतु बहुत काल

* बादशाह जान के सैर के लिये राजरडिवेन्डोवर (जो कि इसी बादशाह के समय इतिहास लेखक था) की पुस्तक देखो।

तक नहीं था पहुंचे । हम लोग आलडर्नी और फ्रेन्च किनारे केपडी-लाहोग के बीच में से होकर गये और आलडर्नी का दूसरा ओर देखा और इसके उपरांत बहुत देर के बाद सार्क, गरेन्सी और और दूसरे टापुओं को देखा । जब हम लोग आलडर्नी रेस से आगे बढ़े तब समुद्र स्थिर था और तब वर्टी ने अपने मल्लाही कपड़े को जिसको कि उसने जहाज़ के छत पर सीया था और जो दूसरे मल्लाहों का कपड़ा बनाता है पहिना । जब वह अफसरों और मल्लाहों के सामने जो कि उसके देखने के लिये छत पर बटुरे थे आया तब उन्हों ने उसको आनन्दपूर्ण किया और सब उससे प्रसन्न थे । जर्सी का किनारा अत्यंत मनोहर है और हम लोगों को सेन्टहेलियर्स में जाने से उसके चारो ओर जाना पड़ा । हम लोग पहिले रोनडेनेज कि ओर से होकर तब ग्रासनेज की ओर से जिसमें एक बुर्ज है फिर सेन्ट ओान की खाढ़ी की ओर से जो कि पुराने चट्टान पर बना हुआ बुर्ज है और ब्रेलेडी की खाढ़ी की ओर से होकर गये । पहाड़ के लाल किनारे और चट्टाने जो अस्त होते हुये सूर्य के किरण पड़ने से चमकते थे बहुत मनोहर देख पड़ते थे । आखिरकार जब सात बजने को १५ मिनिट बाकी था तब हम लोग सेन्टआबिन की खाढ़ी में जिसमें सेन्टहेलियर्स हैं पहुंचे । खाना खाने के उपरांत हम लोग रोशनी और हर्ष की अग्नि देखने के लिये जहाज़ के छत पर गये ।

सेन्ट हेलियर्स के आगे ।

बृहस्पतिवार सितम्बर ३ ॥

दिन अत्यंत मनोहर था । अब तक मैं ने इससे सुंदर गहिरा और

नीला समुद्र न देखा था । यह नेपल्स की नाईं है और आलबर्ट ने कहा यह सेन्टआबिन की खाड़ी जिसमें हम लोग ठहरे हैं सचमुच नेपल्स की खाड़ी की नाईं है । नारमनपाइंट की बांईं ओर एक नीचा बुर्ज है इसके पास सेन्टआबिन नामक खाड़ी है और उसके सामने चट्टान पर बना हुआ एक बुर्ज है दाहिनी ओर आगे बढ़कर एलीजेबथ कासल है । यह एक चट्टान पर बना हुआ मनोहर किला है इसके पीछे निकटवर्त्ती सेन्टहेलियर्स का नगर है । रोशनी का रंग और उससे जो असर पैदा हुआ ऐसे मनोहर थे कि उनका बर्णन नहीं कर सक्ते हैं । लेडी और साहिबों के साथ हम लोग अपने नौका में चढ़े और उस पर से फेयरी जहाज़ की छत पर जाकर लंगड़गाह तक गये और तब फिर अपनी नौका पर चढ़े । हम लोग विकटोरिया लंगड़गाह के घाट की सीढ़ी पर उतरे । यहां बहुत से लोग हर्ष के कारण चिल्ला रहे थे यहां तोपें छूट रही थीं और बाजा बज रहा था । उस नगर की सब लेडी जो अच्छे २ कपड़े पहिने थीं हम लोगों की पेशवाई की । वे हम लोगों को रस्ते में फूल छींटती हुई हम लोगों को एक चंदवा के नीचे लेगईं जहां कि मैंने पलटन के लोगों का और मुल्क के इन्तिज़ाम करनेवालों के अभिवादन पत्र को सुना । तब हम लोग गाड़ी पर सवार होकर स्तम्भ के ओर से गये कर्नल लीक्रोटियर हमारे पलटन के मुसाहेब दूसरे अफसरों के साथ हमारे एक ओर घोड़े पर सवार चलते थे और अलबर्ट के एक ओर लीबर्टन जो कि उस प्रबल ५००० पलटनों के सेनापति हैं जो कि गल्लियों में कितार में खड़ी थी और जो कि स्तम्भ के निकट थीं जाते थे । मुल्क के इन्तिज़ाम करने वाले लोग पलटनों के आगे २ पैदल चलते थे । भीड़ बड़ी थी लेकिन इन्तिज़ाम निहायत उम्दा था और लोग उत्साह

युक्त थे यदि उतने उत्साह युक्त नहीं थे जितने गर्नसी के लोग थे। यह नगर बहुत बड़ा है और यहां के लोगों को हम लोगों के आने के लिये तयारी करने को बड़ा समय मिला था। यहां फूलों के मेहराब और भूषण सच-मुच बहुत सुंदर थे और उनपर बहुत से लिखिताक्षर थे। यहां के सब गंवार लोग फ्रेंच बोलते हैं और पुलिस जो हम लोगों के निकट से आते जाते थे इसी भाषा को बोलते हैं। यहां जो हम लोगों की पेशवाई हुई उससे बड़ा हर्ष हुआ। इस नगर के एक गल्ली में एक स्थान था जहां ग्रेनवील से आई हुई फ्रेञ्च औरतें जो अद्भुत कपड़ा पहिने थीं और जिनके सिर पर सफेद रुमालें थीं बैठी थीं। बहुत सी गलियों में से होकर हम लोग गाड़ी पर चढ़कर गवर्नमेंटहौस को गये फिर इसके बाहर न निकले। जर्नैल गिब इस स्थान के स्वामी अत्यंत दुर्बल हो गये हैं। इसके उपरांत हम लोग द्वीप के मध्य में जल्दी आगे बढ़े और पैदल चलने वाले लोग ठहर गये। यह द्वीप अत्यंत मनोहर है और इसमें सब्जी बड़ी है इसमें बहुत सी वाटिका हैं जैसा कि मेयन्स में हैं। हम लोग लाहेगबे के अद्भुत और पुराने बुर्ज के पास से गुजरे। यह बहुत पुरना है और मोन्टआर्गैल के किले को जो ग्रोविल में है गये। यह एक मनो-हर स्थान पर बना है और यहां से समुद्र देख पड़ता है। यहां पर राबर्ट ड्यूक आफ नारमंडी विलियम दी कांकरर का लड़का रहता था* ॥

---

* मोन्ट आर्गुमल को गैरेकासल भी कहते हैं। ड्यूक राबर्ट दूसरा विलियम का लड़का गौरे कासल में जो नारमंडी में है रहता था। ड्यूक राबर्ट पहिला जिसे प्रायः लोग राबर्ट आफ डेबल कहते थे जर्सी में बारह दिन तक रहा और उस समय गौरेकासल में जो उस द्वीप में है रहा इसी कारण यह लोग कहते हैं कि राबर्ट दूसरा यहां रहता था परंतु इस विषय में कुछ प्रमाण नहीं है॥

कुछ दूर तक हम लोग टहलते गये और एक मुर्चा के स्थान से जहां पर तोपें नहीं रक्खी हैं खाढ़ी और फ्रेंचकोस्ट भली भांति से दिखलाई पड़ता है और फ्रेंचकोस्ट केवल १३ मील पर इस स्थना से है। लोगों को बड़ा घमंड है कि मोन्टआर्गेल को कोई शत्रु न लेसका परंतु हम लोगों को यह बात ज्ञात हुई है कि इसको शत्रुओं ने धोखे से लेलिया और थोड़े दिनों तक यह उनके अधिकार में रहा। गर्नसी को कोई न लेसका * ॥

हम लोग गाड़ी में फिर आये और स्तम्भ के देखने के लिये पहले से एक नज़दीक रस्ते से और शहर के दूसरे भाग से गये। टापू में एक अद्भुत एल्म का बहुत सुन्दर वृक्ष है यह और प्रकार के वृक्षों से भिन्न है इसके पत्ते बहुत चौड़े हैं और ये अकेकिया वृक्ष के पत्तों की नांई निकलते हैं। भीड़ बहुत थी और सोने के समय गरमी बड़ी थी॥

हम लोग किश्ती में फिर सवार हुये परंतु बहुत थोड़ी दूर जाना पड़ा क्योंकि फेयरी चन्द गजों पर थी। यह लंगड़गाह बहुत अच्छे जगह पर है यह भीड़ और किनारे पर किले के कारण एक आधे खेलगृह की नाईं जान पड़ता है। सूरज के गरमी और चमक के कारण मैं ऐसी बीमार थी और सिर ऐसा घूमता था कि मैं सन्ध्याकाल में बहुत देर तक नीचे रही और आलबर्ट फेयरी पर एक घंटे के लिये गये॥

---

* प्रगट स्मरणार्थकलेख से यह बात ज्ञात होती है कि फ्रान्स के लोगोंने गर्नसी को १३३८ में लेलिया था परंतु उन्ही लेखों से जान पड़ता है कि वह १३४० के जेनवरी के महीने में अंगरेज़ों के अधिकार में था। इसलिये यह लोगों का कहना कि गर्नसी को कोई न लेसका सच हो सक्ता है क्योंकि यह जान पड़ता है कि कारनट कासल और गर्नसी के निकट के प्रदेश फरासीसियों के अधिकार में थे और इस कारण लोगों ने इंगलेन्ड में बढ़ा करके प्रगट किया कि सारा द्वीप फरासीसियों के अधिकार में था। प्रायः सामान्य कहावत सच होती है यद्यपि उनके बिरुद्ध बहुत से लिखित पमाण रहते हैं। इस विषय में लेना और पराजय करना इन वाक्यों के अर्थ के भेद जानने से सब बात जान पड़ती है। उस समय में जब बीर हरवर्ड एली में लड़ते थे हम लोग नहीं कहसक्ते थे कि नारमन लोगों ने इंगलेन्ड का पराजय किया॥

फालमथ का लंगरगाह ।

शुक्रवार सितम्बर ४ ॥

फिर आज दिन बहुत अच्छा था और समुद्र भी खूब चमकीला नीला देखायी देता था । पवने आठ बजे हम लोग रवाना हुये । पहले जहाज़ बहुत डगमगा रहा था और बहुत काल तक ठहरा था परन्तु पाल अच्छी तरह उठाने के कारण फिर स्थिर होगया । पांच बजने के बाद समुद्र स्थिर था साढ़े पांच बजे जमीन दिखलायी दी और सात बजे हम लोग फालमथ के लंगड़गाह में पहुंचे जहां कि हम लोग किश्तियो से घिर गये संध्या बहुत मनोरम थी समुद्र स्थिर था और तरखा कुछ भी न था। रात ऐसी स्थिर थी जैसा की सम्भव था और हम लोग जब जहाज़ के छत पर गये तो चन्द्रमा खूब चमकता था । कभी २ पतवारों का पानी में लगना और मनुष्यों की धीमी बोलीयां सुनायी देती थीं परन्तु हम लोगों ने यहां इन्ही को सुना और जर्सी की नाई बड़े २ तरंगों का जहाज़ मे ठक्कर न सुना ॥

मोन्ट्स बे, कार्नवाल ।

सनीश्चरबार सितम्बर ५ ॥

आठ बजे हम लोग फालमथ से रवाने हुये और किनारे २ होकर कार्नवाल को गये और लिजर्डपायिन्ट के आगे लेन्डसएन्ड पहुचने पर यह बड़ा भयानक देख पड़ता था। बारह बजने के करीब हम लोग लेन्डस-एन्ड से गुजरे यह बहुत सुहावना है और चट्टाने बहुत हैं और यहां से

जो वस्तु देख पड़ती हैं बहुत भली जान पड़ती हैं। हम लोग लांगशिप्स के बहुत निकट से गये यहां एक रोशनी का मकान चट्टानों पर बना है। लेन्डसएड जाने के समय समुद्र बहुत स्थिर था। हम लोग ब्रिसन्स के अन्तरीप तक (जहां कि थोड़ी चट्टाने हैं) गये और फिर धूआंकश में लौट आये



यहां पर प्रसिद्ध बटलाक की खाने हैं। दो बजे के कुछ पहले हम इस सुन्दर मोन्ट्स की खाड़ी में आये यह सेन्ट मिचिल के पहाड़ के नजदीक है और बहुत सुन्दर है। जब खाड़ी पहले हम लोगों के दृष्टि में आयी तब सूरज से यह सुन्दर किला रोशन था क्योंकि यह बहुत ऊंचे पहाड़ी पर बना है और यह पानी बढ़ने पर टापूसा जान पड़ता है॥

खाड़ी में पैठते समय मौसहोल के गांव और पेन्जेन्स के नगर से गुजरे पेन्जेन्स बहुत सुन्दर स्थान है और सेन्ट मिचिल के पहाड़ी से डेढ मील पर है। ज्योंहीं हम लोग पहुंचे दिन चमकीला होगया और समुद्र नीला दिखलायी देने लगा॥

आने के थोड़ीही देर बाद हम लोगों ने लंगर डाला किश्तियों की भीड़ बहुत थी। कार्नवाल के मछवाहे अपने अद्भुत और बड़ी नावो में हम लोगों के चारो ओर घूमते थे और फिर लंगर डालते थे इनके सिवाय और भी किश्तियां बहुतसी थीं जिन्हों में लोग भरे थे॥

लोग बहुत होरा मचाते थे बड़े बातूनी थे और इस प्रकार की अंगरेजी बोलते थे कि कुछ समझ में न आती थी॥

मैं अपने सफर में विकी को सबक पढा सकती थी। तीन बजे हम

लोग नौका पर चढ़े और फेयरी तक बहुत प्रकार के किश्तियों के बीच से खे कर ले गये हम लोग लड़कों और उनके आया ग्रनर के साथ फिर फेयरी पर चढ़े । नौका पर चढ़ना और उतरना सहल न था । तरंगे बहुत उठ रहीं थीं यहां तक कि फियरी भी अद्भुत प्रकार से डगमगाती थी । हम लोग धूम्रांकश पर से सेन्ट मिचिल की पहाड़ी को दूसरे तरफ से देखने के लिये खाड़ी के चारो ओर घूम आये इधर से यह और सुन्दर दिखाई देती है इस के बाद पेन्जन्स को गये । आलबर्ट सेवाय लाठ स्पेन्सर के (जो कि बहुत अच्छे हुशियार और समुद्र में कामकाजी पुरुष हैं क्योंकि एक लड़ाई के जहाज़ के कप्तान हैं) और करनैल ग्रे के सब रयीस लोगों के साथ उतरे और तांबा और जस्ता के गलने को देखने के लिये और पेन्जन्स के टेढ़ेमेढ़े पत्थर में किये हुये कामों को देखने को गये । हम लोग यहां पर थोड़ी देरतक ठहरे इसलिये कि यहां से तसबीर खींचे और फिर विकटोरीया और आलबर्ट नामक धूम्रांकश पर साढ़े चार बजे गये बहुत सी किश्तियां हम लोगों के चारो ओर जमी थी । जब लोगों ने बर्टी को देखा तो खुश होकर चिल्लाये कि कार्नबाल के ड्यूक के लिये तीन बार जय-ध्वनि करना चाहिये । आलबर्ट सात बजे के कुछ पहले फिर आये वे उन वस्तुओं से जिन्हको कि उन्होंने देखा था बहुत खुश थे वे टेढ़े मेढ़े पत्थर के नमूने भी लेते आये थे ॥

मौन्ट की खाढ़ी ।

अतवार सितम्बर ६ ॥

सुबह को कुहिरा पड़ रहा था और इस कारण हम लोग सुस्त थे । हवा कुछ भी नहीं बहती थी । साढ़े आठ बजे हम लोग मिस केर और

लाठ स्पेन्सर के साथ अपनी नौका पर सवार हुए और कोई एक झंडा रहित सेन्टमिचिल के नीचे स्थित छोटे लंगड़गाह को गये । सेन्टमिचिल मौन्ट के पीछे मेरेज़ियन अर्थात मारकेटजिव का नगर है । इस नगर का यह नाम यहूदी लोगों के वहां प्राचीन काल में वाणिज्य करने से पड़ा है हम लोग नौका पर से उतरे और एक सड़क से जो कि फेर फार खाकर गई है और टूटी है और जो चट्टानें और घसीली जमीन पर से गई है होकर मौन्ट को टहलते हुये गये और फिर एक पुराने किले में गये जो अच्छी दशा में है और जिस में आनन्द के साथ लोग रह सक्ते हैं। इस किले में बहुत से कमरे हैं। खाना खाने का कमरा अत्यंत मनोहर था ॥

इस किले में पूजा करने का स्थान बहुत अद्भुत है । यहां का बाजा निहायत अच्छा था । आलबर्ट ने उसे बजाया और आवाज़ निहायत अच्छी निकली । पूजा करने के स्थान के नीचे एक बन्दीगृह है जहां कुछ बरस बीते एक बड़े भारी मनुष्य की गठरी जो कि संदूक में नहीं बन्द थी मिली । दरवाजा जमीन से नीचे होकर पूजा करने के स्थान को गया है । आलबर्ट लाठ स्पेन्सर के साथ नीचे गये और फिर उनके साथ और सर जेम्स क्लार्क के साथ जो कि हम लोगों को लाठ पालमर्स्टन और करनेल ग्रे के साथ मिले थे किले के ऊपर गये जिसके के सब से ऊपर के स्थान पर सेन्ट मिचिल की कुर्सी रक्खी है । यहां पर यह कहावत प्रसिद्ध है कि बिवाहित स्त्री और पुरुष में से जो उस कुर्सी पर जाकर पहिले बैठ जाता था उसी के अधिकार में उनका घर रहता था । एक सुथरी बुड्ढी औरत ने कहा कि बहुत से लोगों ने वहां पहिले जाने का प्रयत्न किया था , आलबर्ट

ठीक खाना खाने के बाद आलबर्ट जहाज़ पर से उतरकर कई एक खानों को देखने को गये । पेनरिन के कारपोरेशन के लोग जहाज़ पर आये और कार्नवाल के ड्यूक को देखने के लिये बहुत उत्सुक थे इस लिये में बर्टी के साथ खेमें में गई और लाठ पामरस्टन ने लोगों से कहा कि येही कार्नवाल का ड्यूक है तब पेतरिन के कोतवाल ने कहा कि हम यह आशा रखते हैं कि ये अपने देश और माता पिता के हर्ष के लिये बड़े होंगे ॥

चार बजने के कुछ पहले लड़कों के साथ हम लोग किश्ती पर स-वार होकर फयरी पर गये हम लोग उन किश्तियों के बीच से गये जिन में लोग भरे थे और जो कि जहाज़ के चारों ओर सुबह से इकट्ठा हुई थीं यहां से नदी के चढ़ाव पर सेन्ट जस्टस पूल पर गये इस के बाये ओर सर सी लेमम का स्थान है और लाठ क्लिन्टन का ट्रूफूसिस है फिर ट्रूरो को गये यह बहुत खूबसूरत है और टेमर की नाई है परन्तु इस से सुन्दर है और पेन्टलीन के किले और कोथेल का सा नहां है और यह इन किनारों के बीच में घूमती जाती है जिन्हों पर ओक के जंगल हैं और जिन्हों में बहुत सी छोटी २ खाड़ियां हैं । इन में से सब से सुन्दर किंग हेरीज फेरी है यह स्थान लाठ पालमरस्टन के ग्रेगोथनन के निकट है यहां एक छोटा सुन्दर किश्तियों के लिये गृह बना है यह मकान ठीक जंगल में है जहां ट्रूरो ट्रेगोनी से अलग होती है । आलबर्ट ने कहा कि, इस गृह को देखने से स्विटजरलैंड के टेल के गिरजे का स्मरण होता है । हम लोग ट्रिगोनी को फिर गये यह बहुत सुन्दर है और किनारे बहुत ढालुआं हैं और पानी के किनारे तक जंगल चला आया है फिर हम लोग फिरे और ट्रूरे से मालपस तक

गये मालपस ट्रिगोनी का एक भाग है और यहां से टूरो खूब देखलायी देती है यह कार्नवाल की राजधानी है। यहां हम लोग थोड़ी देर तक ठहरे क्योंकि एक छोटे स्थान सनी कारतर से जो कि टूरो के नीचे है बहुत सी किश्तियां हम लोगों को देखने को आयी सचमुच सब लोग पैदल और गाड़ियों पर चढ़ कर किनारे २ हम लोगों को देखने के लिये आये। ये लोग बहुत खुश हुए और जब बर्टी इन को दिखाया गया तो ऐसे जान पड़े कि जैसे कि इन पर जादू हो गया है यह सब देखने से बड़ा हर्ष प्राप्त हुआ ॥

हम लोग पेड़निसकिले के बाहर स्वानपूल को गये यहां से किश्ती पर सवार होकर हम लोग किनारे पर जाल के खींचे जाने को देखने के लिये गये। फालमथ निवासी फाक्सन जो कि क्वेकर हैं और जिन्हें ने हम लोगों के लिये फूल फल और और बहुत वस्तु भेज दिया कह कि जाल से सब प्रकार की मछली मारी जावें और हम लोग देखें परन्तु जब जाल निकाला गया तो एक भी मछली न मिली। तब हम लोग फेयरी पर फिर गये। स्वानपूल के किनारे के निकट का जल ऐसा स्वच्छ है कि नीचे की कंकड़ी भी गिनी जासक्ती हैं ॥

मंगलवार सितम्बर ८ ॥

सुबह जब हम लोग लड़कों के साथ खाना खाते थे पानी बरसता था। दस बजे हम लोग फोवे में पहुंचे यह डार्टमथ की नायीं एक कोनड़े में है यह डार्टमथ के इतना तो नहीं सुन्दर है परन्तु सुहावना है। हम लोग लड़कों को लाठ स्पेनसर के साथ जिनकी तबीयत अच्छी न थी छोड़ कर और किश्ती पर सवार होकर फवे में बीबियों और साहिबों के साथ उतरे टेलर साहेब जो कि फालमथ से हमारे साथ

आये भी थे । बीबियों के साथ हम लोग गाड़ी पर सवार होकर बहुत सकरी गलियों में से गये ऐसी गलियां हम ने इंगलैंड में नहीं देखा था फिर एक खड़ी पहाड़ी पर गये साहेब लोग हमारे पीछे २ थे एक आदमी पहाड़ी पर चढ़ने से बहुत डर गया परन्तु हम लोग खैराफियत से ऊपर पहुचे । फिर हम लोग बहुत दूर तक बुरी और सकरी सड़कों से गये जब खूब ऊपर पहुंचे तो कार्नवाल के पहाड़ी गांव बहुत सोहावने जान पड़ते थे पहाड़ी खेतें से छिपी थी और झाड़ियां भी यहां बहुत थीं । निदान हम लोग एक खेत में आये जहां सड़क कोई न थी परन्तु हम लोग नीचे अच्छी तरह उतर आये और एक दूसरे पहाड़ी के ऊपर गाड़ी पर से उतरे यहां रास्टरमेल के पुराने किले का लताओं से छिपा और जंगल से घिरा चक्राकार ढूह है यह कार्नवाल के डची के मातहत है इसी में सन् १३०० इसवी के लगभग कार्नवाल का सब से पिछला लाठ रहता था यहां से यह बड़ा रमणीक देखायी देता था ॥

हम लोगें ने रास्टरमेल की खान देखा यह भी कार्नवाल के डची में शामिल है । यहां लोहे की खान है और यह बहुत पटपर है । आलबर्ट और मैं एक झोये में बैठी और खान खोदने वालें से नीचे खीच ली गई टेलर साहिब हम लोगें के पीछे २ आते थे । खानवाले बहुत अद्भुत ऊन का कपड़ा पहनते हैं उनकी टोपी ऐसी होती है और पोशाक ऐसा है



इनकी टोपियें के सामने कंडील लगी रहती है । इस समय कंडीलें

खानों के बगल में लगी थीं और जो लोग झौआ नहीं खींचते थे रौशनी ले जाते थे । आलबर्ट और उनके साथ के रईस लोग खानवालों की सी टोपी पहिने थे। ट्रक और चट्टानों के बीच से जाने की कोई रस्ता न थी परन्तु कभी २ सिर ऊपर करने को जगह रहती थी। यह बहुत अद्भुत स्थान है और इस रौशन स्थान में सब बस्तु अलौकिक जान पड़ती थी। हम लोग उतर कर और कुछ ऊपर चढ़ कर भट्ठे के नलों को देखने को गये । आलबर्ट ने कई टुकड़े तोड़े परन्तु ये ऐसे सख़्त होते हैं कि बरुद से उड़ाये जाते है । खानवाले हम लोगों को देखने से बहुत खुश हुये ये बहुत अच्छे और बुद्धिमान् पुरुष हैं । हम लोग जब बाहर निकले तब आंखें जगमगाने लगीं ॥

हम लोग गाड़ी में सवार होकर लास्टविथियल के छोटे नगर में गये यहां लोगों ने हम को अभिवादन पत्र दिया यहां से अगार रावर्ट साहेब के बाटिका में गये इसके देखने से कोथील के बाटिका का स्मरण हुआ । हम लोग उसी रस्ते से फवे को आये यहां से होकर हम लोग एक बड़ी सकरी रस्ते से गये इसमें पत्थर बहुत था । हम लोग नदी के ऊपर २ प्लेस जो कि ट्रफरी साहेब का है को गये । यह इनको दे दिया गया था जैसा कि इनके तसवीरों से ज्ञात होता है । यह तसवीर बहुत पुराने समय की है । चौदहें वा पन्द्रहें शतसंबत में इस स्थान को ट्रेफरी नामक एक बीबी ने उस समय जब कि उसका पति न था बड़े मुशकिल से बचाया था इस वृद्ध मनुष्य ने हम को सब दिखलाया इन्हों ने एक दालान भी दिखलाया जो कि बिलकुल नहीं बन चुकी थी इस में पारफरी पत्थर जड़े थे ये सब कार्नवाल से आये थे इसके बाद हम लोग जहाज़ पर चढ़ने के स्थान पर गये और फौरन जहाज़ पर चढ़े । टेलर साहेब का इन्तजाम बहुत ही अच्छा और प्रशंसनीय था ॥

असवर्न।

बुद्धवार सितम्बर ६ ॥

हम लोग सात बजे उठे और ठीक नीडल्स के आगे थे ॥

किलार्नी के झीलों का बयान।

मंगलवार अगस्त २२ १८६१ ॥

ग्यारह बजे हम लोग अपनी निज गाड़ी में और एक दूसरी गाड़ी में सवार होकर और टट्टुओं पर चढ़ कर रास के किले को देखने के लिये रवाना हुये। यह पहले बहुत बड़ी और मज़बूत गढी थी इसी नाम से केनमेयर के घराने के लोग प्रसिद्ध हैं। यहां भीड़ बड़ी थी और किश्तियां भी बहुत थीं। आठ डांड की एक सुन्दर नाव में हम लोग चढ़े वह बहुत सुगमता से खेयी जाती थी लाट कासलरास उसको ले जाते थे। चारो लड़के लेडी चरचिल लेडी कासलरास और लाट ग्रेनवील हमारे साथ थे ॥

हम लोग पहिले इनिस्फालेन के टापू के चारो ओर खेकर लोवरलेक में कुछ दूर तक गये। दृष्टि बहुत अच्छी थी कुछ थोड़ा पानी भी बरसता था यह कोहिरे के कारण था जो कि हमारे ऊपर लटका जान पड़ता था इस से हम लोग डरे परन्तु थोड़ीही देर के बाद सफा हो गया और दिन बहुत अच्छा और गरम हो गया। पवने एक बजे हम लोग सुन्दर ग्लीना पहाड़ के नीचे उतरे यहां एक ढालुये स्थान पर एक बहुत

सुथरी झोपड़ी है । यद्यपि गर्मी बहुत थी परन्तु तिस पर भी हम लोग उम्दा २ चीजो को देखने के लिये टहलते थे । यहां वृक्ष बहुत सुन्दर हैं ओक बर्च आर्ब्यूटस, हाली ओर इव के वृक्ष बड़ी २ घासो के बीच पानी के किनारे तक लगे हैं । पहाड़ियों पर जो कि झील में खड़ी दिखायी देतीं हैं जंगल बहुत है ओर इसी कारण ये स्काटलेन्ड के पहाडियों से भिन्न हैं परन्तु ये अकसर मुझे प्रिय हैलेन्ड का स्मरण करातें हैं । हम लोग झोपड़ी में फिर आये ओर यहां मिजेज़ की ढेर ओर पीट के गंध से हम लोगों को अल्टनाग्विथसाच का स्मरण हुआ । लेडी कासलरास के छोटे मकान के सीढ़ी के ऊपर से लोअरलेक की ओर सब बस्तु देख पड़ती थीं परन्तु लोअरलेक बहुत नीची यहां से जान पड़ती है । हम लोग जल पान करके फिर किश्ती पर सवार हुये ओर फिर चढ़ाव पर खेकर वोल्टविपर के पुल के नीचे से गये यह बहुत सकरा है । हम लोग जाते समय दहिनें ओर एक बिगुल के प्रतिध्वनि को सुनने के लिये ईगलसनेस्ट के पहाड़ी के नीचे ठहरे इस की ध्वनि यद्यपि निकट होती थी परन्तु सुन न पड़ती थी । विपर के पुल के निकट हम लोग उतर पड़े ओर किश्ती को खींच कर बाहर निकाला । सूरज निकल आया ओर चारो ओर की सब सुहावनी बस्तुओं को रोशन किये था परन्तु गर्मी बहुत थी । हम लोग घूमते २ अपर लेक में पहुंचे यहां से सब (ऊचो पहाड़ी समेत) दिखाने लगी । सब से ऊची दीरीकूसनामक है यहां के अन्तरीप ओर टापू जंगल से छिपे हैं कोई वृक्ष बड़े २ आर्ब्यूटस हैं ओर कोई इव इन्हों के कारण आगे की भूमि बहुत सोहावनी जान पड़ती है हम लोग एक छोटी खाड़ी में फिर कर गये जहां हम लोग उतरे ओर साये में थोड़ी देर तक ठहर कर एक खेमे में

जो कि एक झरने के दूसरे ओर गड़ा था गये । इसका नाम डेरीकान्ही है यह बहुत मनोहर है परन्तु मिज़ बहुत ही ज्यादे हैं । खेमें में चाह फल बर्फ समूसे और और चीज़े बहुत अच्छी तरह से रखी थीं । हम लोगों ने थोड़ा चाह पीया इस से बहुत ताजे मालूम होने लगे यद्यपि गरमी यहां बहुत थी । यहां की फलफलहरी जंगल की सी हैं घास पात और वृक्ष खूब जमें हैं । हम लोग किश्ती पर चढ़ उसी रस्ते से गये जिधर से आये थे जाते समय वहां की बस्तुओं की सुन्दरता की प्रशंसा करते थे इस बेर उतार से गये अपने किश्ती के सेवाय कोई और किश्ती तरखा में हम लोगों के साथ न आई परन्तु इस के आगे बहुत सी थीं और यहां से जो देख पड़ता था बहुत अच्छा देख पड़ता था यहां के लोग बहुत उत्साह युक्त थे और होरा बहुत मचाते थे । ऐरिश लोग एक विशेष प्रकार की सीटी बजाते हैं ऐसी और कहीं नहीं सुननें में आती ॥

बुधवार अगस्त २८ ॥

सवा ग्यारह बजे हम लोग गाड़ी पर सवार होकर घूमने को गये । जिन २ रस्तों से गये उनका बर्णन करते हैं । हम लोगों के साथ गाड़ी में जिसको कोचबाक्स पर बैठ कर वेगेलेंड * हांकता था लेडी हर-बर्ट और बर्टी थे । यद्यपि यहां के बड़े २ पहाड़ कुहिरे से ढपे थे

* सन १८४७ से यह हमारा कोचवान है । यह एक अच्छा और मेहनती आदमी है । यह बादशाही घराने में सन १८३१ में नोकर हुआ और १७ बरस तक गाड़ी के घोड़ों का सवार था । इसका पिता ३१ बरस तक विंड्सर में बादशाही घराने का चौकीदार था और अब उसकी उमिर ७५ बरस की है । और उसने ६० बरस तक काम किया है । इसका दादा भी बादशाही घराने में काम करता था । उसने सन १७८८ में काम करना शुरू किया । इस की लड़की प्रिन्स आफ़ वेल्स के लड़कों की दाई है । इस प्रकार से इसके चार पीढ़ी के मनुष्य बादशाही घाराने में नोकरी को किया ॥

और झींसी पड़ रही थी तथापि आस पास की भूमि आदि की सुंदरता से हम लोगों को बड़ा हर्ष हुआ झील का देख पड़ना और मनोहर जंगल जिस में बहुत से आव्यूटस नामक पेड़ थे और एक रस्ता जो पेड़ों के नीचे से कुछ दूर चला गया है और चट्टाने जो यहां अद्भुत प्रकार की हैं इन सभों के देखने से शैर निहायत अच्छी हुई । जब हम लोग गांव के ओर मुड़े और टार्क पहाड़ के चारो ओर गये तब हम लोगों को स्काटलेंड एबरगिलडी के जंगलों क्रेगडेगन और क्रेग क्रूनी का स्मरण हुआ । यह स्थान बहुत अच्छा था । हम लोग टार्क पहाड़ के ऊपर जहां से झर्ना बहता है गये और फिर नीचे आये। हम लोग घर डेढ़ बजे फिर आये । हम लोग चार बजे नौका पर जो हम लोगों के बहुत नज़दीक थी सवार होने के लिये गये । मकरास झील अत्यंत सुन्दर है । जब हम लोग इस स्थान से रवाना हुये तब कुहिरा पड़ रहा था पानी बरसता था और अंधेरा था । ऐसाही दिन जब हम लोग हैलेन्ड में यात्रा करते थे था । हरबर्ट साहिब किश्ती को लेजाते थे । मेरी लड़कियां लेडी हरबर्ट लेडी चर्चिल और लाठ ग्रे- नवील हम लोगों के साथ नौके में थे । हमारे दो लड़के एक नौके में जिसको साहिब लोग खेते थे सवार हुये हम लोगों के साथ चलते थे और दूसरे लोग दो दूसरे नौके में थे हारबर्ट साहिब और उनकी बीबी के प्रार्थना करने के कारण मैंने एक जमीन के टुकड़े पर जो झील में चला गया है मदिरानाकर उसका क्रेष्ठ धर्मसंबन्धी सेचन किया । जब हम इस टुकड़े के पास आये तब आलबर्ट हमारे बांह को पकड़े थे और इस कारण मैं ने भली भांति उस टुकड़े पर मदिरा को डाला । जब हम लोग ब्रिकिन ब्रिज से आगे बढ़े तब लोअर झील भली भांति देख पड़ती

थी और जो कुछ कल्ह हम लोगोंने देखा था वह भी देख पड़ा परंतु वह वैसा न देख पड़ा क्योंकि आज हम लोगोंने उसको दूसरी ओर से देखा। डिनसन पाइन्ट पर हम लोग थोड़े देर तक ठहरे और कभी केवल इधर उधर नाव पर चढ़कर खेते रहे और कभी हरिन के देखने की आशा में खड़े रहे। इसके पास के जंगल और खाड़ियों में बहुत हरिन रहतें हैं। हम लोगों को यह आशा थी कि कुत्ते हरिनों को पकड़कर पानी से बाहर खींचलावेंगे। हम लोगों की आशा पूरी नहीं हुई। हम लोग छ बजने के बाद तक ठहरे परंतु हरिन न देख पड़े। संध्या सफा और अत्यंत मनोरम थी। बहुत सी नौका जिन पर लोग भरे थे और जिन पर झंडे खड़े थे और जो चारो ओर घूमती थीं और जिन पर लोग शोर मचा रहे थे संध्या की रोशनी के कारण बहुत मनोहर देख पड़ती थीं। डर्बी वाटिका के नज़दीक के किनारे पर बहुत से लोग इकट्ठा थे और बहुत सी औरतें जो नीले कपड़े पहिने थीं अपने कपड़ों को घुटने तक उठा कर पानी में हल गईं॥

हम लोग सात बजे मकान को फिर आये और इस समय थोड़ा पानी बरसता था॥